CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2018 with Solution PDF-Set 2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 111**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (क): भाषा व्यवसायी से क्या अभिप्राय है? उनकी पोल कब खुलने लगती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में किसी पद का अर्थ उसके प्रसंग से स्पष्ट होता है। यहाँ भाषा के नाम पर होने वाली राजनीति का संदर्भ महत्त्वपूर्ण है।
- प्रश्न के दोनों पक्ष अलग हैं: भाषा व्यवसायी किन्हें कहा गया है और उनकी वास्तविकता किस स्थिति में प्रकट होती है।

चरण 1: पद का संदर्भ समझें गद्यांश में भाषा व्यवसायियों को राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाला कहा गया है। इसलिए यहाँ व्यवसायी से आशय भाषा का अध्ययन या शिक्षण करने वाले सभी लोगों से नहीं है। यह उन स्वार्थी लोगों के लिए प्रयुक्त व्यंग्यात्मक पद है जो भाषा के समर्थन या विरोध को अपने राजनीतिक हित साधने का माध्यम बनाते हैं।

चरण 2: पोल खुलने का अवसर पहचानें आरंभिक वाक्य के अनुसार हिन्दी के विषय में या उसके विरोध में जब भी कोई हलचल होती है, ऐसे लोगों की बेचैनी सामने आने लगती है। भाषा के प्रश्न पर उनकी प्रतिक्रिया उनके छिपे स्वार्थ को उजागर करती है और राजनीति का ओढ़ा हुआ मुखौटा उतरने लगता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा व्यवसायी वे लोग हैं जो भाषा के नाम पर राजनीति करके अपना स्वार्थ साधते हैं। हिन्दी के समर्थन या विरोध में हलचल होते ही उनकी बेचैनी और वास्तविक स्वार्थ प्रकट होने लगते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में भाषा व्यवसायी का प्रसंगगत अर्थ और पोल खुलने की स्थिति, दोनों अवश्य लिखें।

1(ख). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ख): संविधान में 'संघ' से आप क्या समझते हैं? हिन्दी भाषा को लेकर संघ का क्या कर्तव्य बताया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में संविधान के अनुच्छेद 351 का आशय दिया गया है। उत्तर उसी अंश में बताए दायित्वों पर आधारित होना चाहिए।
- संवैधानिक संदर्भ में संघ का अभिप्राय भारत की केंद्र सरकार से है; इसे किसी सामाजिक संगठन के अर्थ में नहीं लेना चाहिए।

चरण 1: संघ का अभिप्राय स्पष्ट करें यहाँ संघ से भारत की केंद्र सरकार का अभिप्राय है। संविधान में हिन्दी के विकास संबंधी निर्देश इसी के लिए दिए गए हैं। अत: सामान्य बोलचाल में प्रचलित संस्था या संगठन वाला अर्थ इस प्रसंग में उपयुक्त नहीं है।

चरण 2: कर्तव्य के प्रमुख पक्ष बताएँ संघ का कर्तव्य हिन्दी का प्रसार और विकास करना है, ताकि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। इसके लिए हिन्दी की प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली तथा पद ग्रहण करने और आवश्यकतानुसार मुख्यत: संस्कृत तथा गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द लेकर उसे समृद्ध करने का निर्देश है।

चरण 3: निष्कर्ष संघ से तात्पर्य केंद्र सरकार है। उसका कर्तव्य हिन्दी का प्रसार, विकास और समृद्धि करना है, जिससे हिन्दी भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

त्वरित सुझाव: संघ का अर्थ लिखने के बाद प्रसार, विकास और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के उद्देश्य को जोड़ें।

1(ग). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ग): हिन्दी भाषा के विकास की आवश्यकता क्यों है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में हिन्दी के विकास का उद्देश्य उसकी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की क्षमता से जोड़ा गया है।
- उत्तर में आवश्यकता का कारण बताना है; केवल संवैधानिक निर्देश का उल्लेख करना पर्याप्त नहीं होगा।

चरण 1: विकास का उद्देश्य खोजें अनुच्छेद 351 के उद्धृत अंश के अनुसार हिन्दी का विकास इसलिए अपेक्षित है कि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। विभिन्न अनुभवों, विचारों और सांस्कृतिक पक्षों को व्यक्त करने के लिए भाषा के शब्द-भंडार और अभिव्यक्ति-क्षमता का समृद्ध होना आवश्यक है।

चरण 2: गद्यांश की चिंता से संबंध जोड़ें लेखक बताता है कि अंग्रेज़ी की मानसिकता के प्रभाव में अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होते हैं। हिन्दी का विकास उसकी उपयोगिता और अभिव्यक्ति-क्षमता को बढ़ाने के लिए आवश्यक है, ताकि शिक्षा, व्यापार, व्यवहार तथा शासकीय और न्यायिक कामकाज में उसे उचित स्थान मिल सके। इस विकास में दूसरी भारतीय भाषाओं के रूप और पदों का आत्मसात् करना भी सहायक है।

चरण 3: निष्कर्ष हिन्दी का विकास आवश्यक है ताकि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम बने तथा शिक्षा, व्यवहार और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में अपनी प्रभावी भूमिका निभा सके।

त्वरित सुझाव: आवश्यकता बताते समय भाषा के विकास को सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और व्यावहारिक उपयोग से जोड़ें।

1(घ). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (घ): भारत की अन्य भाषाओं से लेखक का क्या तात्पर्य है? यहाँ उनका उल्लेख क्यों हुआ है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के किसी पद का अभिप्राय उसके निकटवर्ती वाक्य से निर्धारित करना चाहिए। यहाँ आठवीं अनुसूची का स्पष्ट संदर्भ है।
- प्रश्न भाषा-समूह की पहचान और उसके उल्लेख के प्रयोजन, इन दो पक्षों का उत्तर चाहता है।

चरण 1: अन्य भाषाओं का तात्पर्य बताएँ भारत की अन्य भाषाओं से लेखक का तात्पर्य हिन्दी के अतिरिक्त संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारतीय भाषाओं से है। गद्यांश में हिन्दुस्तानी का उल्लेख भी अलग से किया गया है। यहाँ विदेशी भाषाओं या केवल अंग्रेज़ी की बात नहीं हो रही, बल्कि भारत की भाषाई परंपरा और विविधता की बात है।

चरण 2: उल्लेख का उद्देश्य स्पष्ट करें इन भाषाओं का उल्लेख हिन्दी के विकास और समृद्धि के संदर्भ में हुआ है। हिन्दी की अपनी प्रकृति को बनाए रखते हुए इन भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करने का निर्देश दिया गया है। ऐसा करने से हिन्दी की अभिव्यक्ति-क्षमता बढ़ेगी और वह भारत की सामाजिक संस्कृति के विभिन्न तत्त्वों को व्यक्त कर सकेगी।

चरण 3: निष्कर्ष अन्य भाषाओं से आशय आठवीं अनुसूची में उल्लिखित हिन्दी के अतिरिक्त भारतीय भाषाओं से है। इनके रूप, शैली और पद ग्रहण करके हिन्दी को समृद्ध तथा व्यापक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने के लिए उनका उल्लेख हुआ है।

त्वरित सुझाव: अन्य भाषाओं की पहचान के साथ यह भी लिखें कि उनसे हिन्दी को रूप, शैली और पद मिलते हैं।

1(ङ). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ङ): 'अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता' से क्या तात्पर्य है? उसका क्या परिणाम हो रहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में प्रयुक्त मानसिकता का अर्थ केवल भाषा का ज्ञान नहीं, बल्कि उसके प्रति बनी दृष्टि और मूल्यबोध है।
- प्रश्न में आशय और परिणाम दोनों पूछे गए हैं; उत्तर को लेखक की व्यक्त चिंता से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: मानसिकता का आशय समझें अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता से तात्पर्य अंग्रेज़ी को ही अधिक प्रतिष्ठित और उपयोगी मानने तथा अपनी भाषाओं की उपेक्षा करने वाली सोच से है। लेखक की चिंता अंग्रेज़ी का ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि उसका ऐसा प्रभुत्व है जिससे अपनी मिट्टी से जन्मी भाषाओं का महत्त्व कम समझा जाने लगे।

चरण 2: परिणाम गद्यांश से बताएँ गद्यांश के अनुसार यह मानसिकता हम पर तथा युवा और किशोर पीढ़ी पर बहुत हावी हो गई है। इससे भारतीय भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में दिखाई देते हैं। शिक्षा, व्यापार, व्यवहार, संसदीय, शासकीय तथा न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को अपेक्षित वर्चस्व नहीं मिल पा रहा। लेखक इन्हीं स्थितियों पर प्रश्न उठाकर संवैधानिक संकल्प और वास्तविक व्यवहार के बीच दूरी दिखाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंग्रेज़ी की मानसिकता से आशय अंग्रेज़ी को श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित मानकर अपनी भाषाओं की उपेक्षा करने वाली सोच है। इसके प्रभाव से हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को उचित स्थान नहीं मिल रहा तथा उनकी अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत हो रहे हैं।

त्वरित सुझाव: परिणाम बताते समय युवा पीढ़ी पर प्रभाव तथा भारतीय भाषाओं की अस्मिता और भविष्य का संकट लिखें।

1(च). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (च): यह कैसे कह सकते हैं कि हमारी अपनी भाषा का भविष्य संकट में है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में भाषा की स्थिति को उसके वास्तविक प्रयोग और नई पीढ़ी की मानसिकता से समझना है।
- उत्तर का आधार दिए हुए पाठ के कथन और उनके पारस्परिक संबंध हैं।

चरण 1: अंग्रेज़ी का मानसिक प्रभाव लेखक के अनुसार अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता समाज तथा युवा और किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो गई है कि अपनी मिट्टी से जन्मी भाषाओं की अस्मिता संकट में दिखाई देती है। अपनी भाषा के प्रति यह घटता विश्वास उसके भविष्य की चिंता का पहला कारण है।

चरण 2: व्यवहार के क्षेत्रों में स्थिति शिक्षा, व्यापार, व्यवहार तथा संसदीय, शासकीय और न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषाओं को अपेक्षित वर्चस्व नहीं मिल पा रहा। उनके विकास के कार्यक्रम भी प्रभावी नहीं हुए। इस प्रकार संवैधानिक संकल्प और वास्तविक उपयोग के बीच की दूरी भविष्य के संकट को प्रकट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष अंग्रेज़ी की मानसिकता के बढ़ते प्रभाव तथा शिक्षा, व्यापार, शासन और न्याय आदि में भारतीय भाषाओं को अपेक्षित महत्त्व न मिलने के कारण उनका भविष्य संकट में प्रतीत होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मानसिकता और वास्तविक प्रयोग, दोनों के संकट को गद्यांश से जोड़कर लिखें।

1(छ). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (छ): हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के वर्चस्व से आप क्या समझते हैं? यह कैसे संभव हो सकता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वर्चस्व का अर्थ गद्यांश में शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में अपनी भाषाओं का प्रभावी प्रयोग है।
- उत्तर का आधार दिए हुए पाठ के कथन और उनके पारस्परिक संबंध हैं।

चरण 1: वर्चस्व का आशय हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के वर्चस्व का अर्थ है कि शिक्षा, व्यापार, व्यवहार, संसद, शासन और न्याय की प्रक्रियाओं में उनका व्यापक और प्रभावशाली उपयोग हो। वे केवल बोलचाल तक सीमित न रहें, बल्कि महत्त्वपूर्ण सामाजिक कार्यों की अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम बनें।

चरण 2: इसे संभव करने का उपाय इसके लिए संविधान के भाषायी संकल्पों को प्रभावी कार्यक्रमों द्वारा व्यवहार में लाना होगा। हिन्दी का प्रसार और विकास किया जाए तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और शब्द ग्रहण करके उसे समृद्ध बनाया जाए। अंग्रेज़ी की मानसिकता से उबरकर अपनी भाषाओं को शिक्षा और सार्वजनिक कार्यों में अपनाना भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष वर्चस्व अपनी भाषाओं का शिक्षा, शासन, न्याय और व्यवहार में प्रभावी स्थान है। संवैधानिक निर्देशों के अनुरूप उनके विकास और वास्तविक प्रयोग से यह संभव होगा।

त्वरित सुझाव: वर्चस्व समझाते समय गद्यांश में बताए क्षेत्रों तथा विकास के निर्देश को साथ रखें।

1(ज). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ज): गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- उत्तर का आधार दिए हुए पाठ के कथन और उनके पारस्परिक संबंध हैं।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानें गद्यांश में हिन्दी के संवैधानिक विकास के निर्देश और भारतीय भाषाओं की वर्तमान उपेक्षा की चर्चा है। लेखक विशेष रूप से अंग्रेज़ी की मानसिकता के कारण अपने भाषायी भविष्य पर चिंता प्रकट करता है।

चरण 2: शीर्षक का औचित्य केवल संविधान या अंग्रेज़ी को शीर्षक बनाना विषय को सीमित करेगा। हिन्दी के विकास और उसके सामने खड़े संकट को समेटने वाला शीर्षक लेखक की मुख्य चिंता को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक: "हिन्दी का विकास और उसके भविष्य की चिंता।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में पूरे गद्यांश का मुख्य सरोकार रखें; किसी एक उदाहरण को शीर्षक न बनाएँ।

2(क). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

प्रश्न (क): क्षमा कब कलंक और कब शृंगार हो जाती है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता क्षमा का मूल्य क्षमा करने वाले की शक्ति और परिस्थिति से तय करती है।
- उत्तर का आधार दिए हुए पाठ के कथन और उनके पारस्परिक संबंध हैं।

चरण 1: विवश क्षमा की स्थिति जब कोई व्यक्ति पौरुष और प्रतिकार की शक्ति के अभाव में अत्याचार सहता है, तो उसकी क्षमा विवशता का रूप बन जाती है। ऐसी निष्क्रिय क्षमा वीरता के लिए कलंक है।

चरण 2: समर्थ क्षमा की स्थिति प्रतिकार की क्षमता रखने वाला शूरवीर यदि क्षमा करता है, तो उसमें दुर्बलता नहीं, आत्मसंयम दिखाई देता है। इसी आशय से कवि कहता है, "क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।

चरण 3: निष्कर्ष असमर्थता और कायरता से उपजी क्षमा कलंक है, जबकि प्रतिकार में सक्षम शूरवीर की क्षमा उसका शृंगार है।

त्वरित सुझाव: क्षमा के उत्तर में शक्ति होते हुए क्षमा करने और विवश होकर सहने का अंतर स्पष्ट करें।

2(ख). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

प्रश्न (ख): प्रतिशोध किसे कहते हैं? वह कब आवश्यक होता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में प्रतिशोध अन्यायपूर्ण आघात के प्रतिकार के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।
- उत्तर का आधार दिए हुए पाठ के कथन और उनके पारस्परिक संबंध हैं।

चरण 1: प्रतिशोध का अर्थ अपने ऊपर हुए अत्याचार, अपमान या आक्रमण का प्रत्युत्तर देकर उसका प्रतिकार करना प्रतिशोध है। कविता में यह शौर्य की जागृति और अपमान का विरोध करने वाली शक्ति से जुड़ा है।

चरण 2: आवश्यक परिस्थिति जब अन्यायी चोट पहुँचाता है और चुप रहने से अपमान तथा पराधीनता बनी रहती है, तब स्वाभिमान और धर्म की रक्षा के लिए प्रतिकार आवश्यक होता है। कवि इसे चोट खाकर जागे सिंह की प्रतिक्रिया से स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अन्याय या आघात का प्रतिकार प्रतिशोध है। अत्याचार का विरोध करके स्वाभिमान और धर्म की रक्षा करनी हो, तब वह आवश्यक होता है।

त्वरित सुझाव: प्रतिशोध को लोभ की लड़ाई से अलग रखते हुए कविता की चोट और प्रतिकार वाली स्थिति लिखें।

2(ग). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

प्रश्न (ग): सहिष्णुता को विभूषण और अभिशाप दोनों क्यों माना गया? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि सहिष्णुता को शक्तिशाली की उदारता और पराजित की विवशता के संदर्भ में देखता है।
- उत्तर का आधार दिए हुए पाठ के कथन और उनके पारस्परिक संबंध हैं।

चरण 1: विजेता का विभूषण विजेता शक्ति और प्रतिकार की क्षमता रखते हुए भी सहिष्णुता दिखाता है। इसलिए उसका सहनशील होना उदारता और आत्मसंयम का परिचायक है तथा उसके व्यक्तित्व का विभूषण बनता है।

चरण 2: पराजित का अभिशाप हारी हुई जाति यदि अन्याय और अपमान को चुपचाप सहती रहे, तो उसकी सहिष्णुता दुर्बलता और पराधीनता को बनाए रखती है। ऐसी सहनशीलता उसे स्वाभिमान के लिए संघर्ष से रोकती है, इसलिए अभिशाप है।

चरण 3: निष्कर्ष सामर्थ्यवान विजेता की सहिष्णुता उदारता होने से विभूषण है, पर हारी हुई जाति की विवश सहिष्णुता अपमान बनाए रखने के कारण अभिशाप है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में विजेता की स्वतंत्र उदारता और पराजित की विवश सहनशीलता का कारण बताइए।

2(घ). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।
प्रश्न (घ): कैसा युद्ध धर्म के विरुद्ध माना गया है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता युद्ध का मूल्यांकन उसके उद्देश्य से करती है; लोभ और रक्षा के उद्देश्य अलग हैं।
- उत्तर का आधार दिए हुए पाठ के कथन और उनके पारस्परिक संबंध हैं।

चरण 1: कविता का प्रत्यक्ष संकेत कवि कहता है, "लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है। दूसरों की संपत्ति छीनने की इच्छा से होने वाला आक्रमण शौर्य या धर्म की रक्षा नहीं, स्वार्थ की पूर्ति है।

चरण 2: युद्ध के उद्देश्य का भेद ऐसे युद्ध का लक्ष्य परस्व हरण है। इसके विपरीत कविता में चोट खाने पर अन्याय के विरोध में जागे पौरुष को धर्मयुद्ध कहा गया है। अतः हर युद्ध धर्मयुद्ध नहीं होता; उसका उद्देश्य निर्णायक है।

चरण 3: निष्कर्ष लोभवश दूसरों की संपत्ति छीनने के लिए लड़ा गया युद्ध धर्म के विरुद्ध माना गया है।

त्वरित सुझाव: युद्ध का विरोध बताते समय परस्व हरण और लोभ को मुख्य कारण के रूप में अवश्य लिखें।

2(ङ). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

प्रश्न (ङ): भाव स्पष्ट कीजिए – 'पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का भाव आसपास की पंक्तियों के आधार पर स्पष्ट किया जाता है। यहाँ पौरुष का अर्थ अन्याय का सामना करने वाला साहस है।
- कवि लोभवश किए गए आक्रमण और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए किए गए प्रतिरोध में अंतर करता है।

चरण 1: प्रसंग का संकेत कवि ने दूसरों की संपत्ति छीनने के लिए होने वाली लड़ाई को क्षात्रधर्म के विरुद्ध बताया है। इसके विपरीत, चोट खाया हुआ सिंह जब जागता है, तब उसका प्रतिरोध अन्याय के विरुद्ध उठने की शक्ति का प्रतीक बनता है।

चरण 2: पंक्ति का आशय अत्याचार और अपमान के विरुद्ध जब मनुष्य का साहस जाग उठता है और वह अपने सम्मान तथा अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करता है, तब उसका संघर्ष धर्मयुद्ध कहलाता है। उसका उद्देश्य लोभ या परस्वहरण नहीं, अन्याय का प्रतिकार करना होता है।

चरण 3: निष्कर्ष अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए जागा हुआ साहस तथा आत्मसम्मान की रक्षा का संघर्ष ही यहाँ धर्मयुद्ध है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ लिखते समय पौरुष को साहस और धर्मयुद्ध को न्याय की रक्षा के संघर्ष से जोड़ें।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : कम्प्यूटर : मेरे जीवन में [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में एक विषय के विभिन्न पक्षों को परस्पर जुड़े वाक्यों में प्रस्तुत किया जाता है। विषय से संबंधित अनुभव और स्पष्ट विचार उसकी प्रभावशीलता बढ़ाते हैं।
- लगभग 150 शब्दों की सीमा में भूमिका, विस्तार और सार्थक समापन रखें। प्रथम पुरुष का प्रयोग विषय के निजी स्वर के अनुकूल है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति शीर्षक के बाद एक ही अनुच्छेद में विचार प्रस्तुत करें। पहले अपने जीवन में कम्प्यूटर का स्थान बताएँ, फिर पढ़ाई, सूचना, संचार और रचनात्मक कार्यों में उसकी उपयोगिता स्पष्ट करें। अंत में विवेकपूर्ण उपयोग और समय के संतुलन पर बल दें। पत्र की तरह पता या संबोधन लिखने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: विषयवस्तु का क्रम निजी अनुभव से आरंभ करने पर लेखन स्वाभाविक बनता है। उपयोगिता के लिए ठोस उदाहरण चुनें, जैसे कठिन पाठ समझना, परियोजना तैयार करना और टंकण सीखना। लाभ बताते हुए आँखों के स्वास्थ्य, विश्वसनीय जानकारी और निजी विवरण की सुरक्षा का ध्यान रखने की बात भी जोड़ें। सभी वाक्य कम्प्यूटर और अपने जीवन के संबंध को आगे बढ़ाएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **कम्प्यूटर : मेरे जीवन में**

कम्प्यूटर मेरे जीवन का उपयोगी साथी है। इसकी सहायता से मैं पढ़ाई को अधिक रोचक और व्यवस्थित बना पाता हूँ। कठिन विषयों के शैक्षिक वीडियो देखता हूँ, आवश्यक जानकारी खोजता हूँ और परियोजनाएँ तैयार करता हूँ। शब्दकोश तथा पुस्तकें भी आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। लेख लिखने, चित्र बनाने और प्रस्तुतियाँ तैयार करने से मेरी रचनात्मकता विकसित होती है। दूर रहने वाले संबंधियों से बातचीत करने में भी कम्प्यूटर सहायक है। खाली समय में कभी संगीत सुनता हूँ, पर मनोरंजन को पढ़ाई पर हावी नहीं होने देता। मैं समझता हूँ कि इंटरनेट की हर सूचना सही नहीं होती, इसलिए विश्वसनीय स्रोतों का चयन करता हूँ। अपनी निजी जानकारी भी अनजान लोगों से साझा नहीं करता। लंबे समय तक स्क्रीन देखने से बचने के लिए बीच में विश्राम और बाहर खेलना आवश्यक मानता हूँ। मेरे लिए कम्प्यूटर ज्ञान बढ़ाने का साधन है। उसका विवेकपूर्ण उपयोग ही उसे जीवन में सच्चा सहयोगी बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष अनुच्छेद कम्प्यूटर की उपयोगिता को व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़ता है और संतुलित उपयोग के विचार पर समाप्त होता है।

त्वरित सुझाव: निजी विषय पर लिखते समय दो ठोस अनुभव जोड़ें और अंतिम वाक्य में अपना स्पष्ट दृष्टिकोण रखें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : भारत की सामाजिक समस्याएँ [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक विषय के अनुच्छेद में समस्या का परिचय, उसके प्रभाव और व्यावहारिक समाधान क्रमबद्ध ढंग से रखे जाते हैं। भाषा स्पष्ट तथा दृष्टिकोण संवेदनशील होना चाहिए।
- लगभग 150 शब्दों में विषय के प्रमुख पक्ष चुनें। केवल समस्याओं की सूची देने के स्थान पर उनके आपसी संबंध और समाधान की दिशा भी स्पष्ट करें।

चरण 1: अनुच्छेद का प्रारूप उपयुक्त शीर्षक देकर एक ही अनुच्छेद में भूमिका, विस्तार और निष्कर्ष लिखें। आरंभ में भारत की उपलब्धियों के साथ सामाजिक चुनौतियों का उल्लेख करें। फिर गरीबी, अशिक्षा, भेदभाव और कुरीतियों के प्रभाव बताएँ। अंत में शिक्षा, समान अवसर और नागरिक भागीदारी जैसे उपायों के साथ आशावादी समापन करें।

चरण 2: तर्क और उदाहरणों का चयन किसी समुदाय को दोष देने के बजाय सामाजिक व्यवहार और व्यवस्था की कमियों पर विचार करें। शिक्षा से वंचित बच्चे, रोजगार के अवसरों का अभाव तथा लड़कियों के साथ भेदभाव जैसे उदाहरण विषय को ठोस बनाते हैं। सरकारी प्रयासों के साथ परिवार और नागरिकों की भूमिका बताने से समाधान संतुलित होता है। अनावश्यक आँकड़ों और अप्रमाणित दावों से बचें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **भारत की सामाजिक समस्याएँ**

भारत विविधताओं और संभावनाओं का देश है, फिर भी अनेक सामाजिक समस्याएँ उसके विकास में बाधा हैं। गरीबी और बेरोजगारी के कारण बहुत से परिवार जीवन की आवश्यक सुविधाओं से वंचित रहते हैं। अशिक्षा लोगों को अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होने देती और अंधविश्वास को बढ़ावा देती है। जातिगत भेदभाव तथा स्त्री और पुरुष के बीच असमानता सामाजिक एकता को कमजोर करते हैं। दहेज जैसी कुरीतियाँ परिवारों पर आर्थिक और मानसिक दबाव डालती हैं। बालश्रम बच्चों से शिक्षा और सुखद बचपन छीन लेता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार के अवसर और कानूनों का प्रभावी पालन आवश्यक हैं। परिवारों को लड़कियों और लड़कों को समान अवसर देने चाहिए। नागरिकों को भेदभाव तथा कुरीतियों का विरोध अपने घर से आरंभ करना होगा। सरकार और समाज के संयुक्त प्रयास ही परिवर्तन ला सकते हैं। संवेदनशीलता, समानता और जिम्मेदारी

अपनाकर हम अधिक न्यायपूर्ण भारत बना सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सामाजिक समस्याओं का समाधान शिक्षा, समान अवसर, प्रभावी कानून और जागरूक नागरिकों के संयुक्त प्रयासों में निहित है।

त्वरित सुझाव: सामाजिक विषय के अनुच्छेद में समस्याओं के साथ उनके व्यावहारिक समाधान भी अवश्य लिखें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद-लेखन में एक केंद्रीय विचार को क्रमबद्ध और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ स्वाभिमान और अभिमान का अंतर स्पष्ट करना आवश्यक है।
- स्वाभिमान अपनी गरिमा की रक्षा करने का भाव है; अभिमान दूसरों को छोटा समझने की प्रवृत्ति है। उदाहरण तथा संतुलित निष्कर्ष से विषय स्पष्ट होता है।

चरण 1: विषय का आशय और रूपरेखा प्रारंभ में स्वाभिमान का अर्थ बताइए। फिर स्पष्ट कीजिए कि आत्मसम्मान रखने वाला व्यक्ति अपनी योग्यता पर विश्वास करता है, लेकिन दूसरों की गरिमा भी स्वीकार करता है। इसके बाद अभिमान के दुष्परिणाम बताकर विनम्रता, परिश्रम और आत्मविश्वास का महत्त्व रखिए। अंत में स्वाभिमान अपनाने और अभिमान छोड़ने की प्रेरणा दीजिए।

चरण 2: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं**

स्वाभिमान मनुष्य के व्यक्तित्व का वह गुण है, जो उसे अपनी गरिमा बनाए रखने की प्रेरणा देता है। स्वाभिमानी व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में भी अनुचित साधनों का सहारा नहीं लेता। वह अपनी मेहनत और क्षमता पर विश्वास करता है, पर दूसरों का अपमान नहीं करता। इसके विपरीत, अभिमानी व्यक्ति स्वयं को सबसे श्रेष्ठ समझकर दूसरों की उपेक्षा करता है। धन, पद या सफलता का अहंकार उसे अपनी कमियाँ देखने से रोक देता है। परिणामस्वरूप वह सीखने के अवसर और सच्चे संबंध खो देता है। स्वाभिमान हमें अन्याय का विरोध करना सिखाता है, जबकि अभिमान प्रायः विवाद पैदा करता है। इसलिए सफलता मिलने पर विनम्र रहना और असफलता में आत्मविश्वास बनाए रखना आवश्यक है। अपनी बात दृढ़ता से कहें, किंतु दूसरे की उचित बात भी स्वीकार करें। सच्ची श्रेष्ठता दूसरों को नीचा दिखाने में नहीं, अपने आचरण को ऊँचा उठाने में है। हमें स्वाभिमानी बनना चाहिए, अभिमानी नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष यह अनुच्छेद स्वाभिमान को गरिमा, आत्मविश्वास और विनम्रता से जोड़ता है तथा अभिमान से उत्पन्न उपेक्षा और अहंकार का विरोध करता है।

त्वरित सुझाव: लिखते समय जाँचें कि आत्मसम्मान के साथ दूसरों का सम्मान भी बना रहे; दोनों भावों का अंतर उदाहरण और आचरण से स्पष्ट करें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : विकास के लिए शिक्षा आवश्यक [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में शिक्षा और विकास के संबंध को एक केंद्रीय विचार के रूप में प्रस्तुत करना है। विकास में आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक जागरूकता और मानवीय मूल्यों को भी शामिल किया जाता है।
- विषय को स्पष्ट करने के लिए शिक्षा से मिलने वाले ज्ञान, कौशल, समान अवसर और जिम्मेदार नागरिकता का उल्लेख उपयोगी है। अनुच्छेद लगभग 150 शब्दों में संगठित रहना चाहिए।

चरण 1: विचारों का क्रम निर्धारित करना आरंभ में शिक्षा को विकास का आधार बताइए। फिर व्यक्ति की आजीविका, विवेक और

आत्मनिर्भरता पर उसका प्रभाव समझाइए। सामाजिक स्तर पर समानता, स्वास्थ्य, वैज्ञानिक सोच और लोकतांत्रिक भागीदारी से उसका संबंध जोड़िए। अंत में सभी तक गुणवत्तापूर्ण और मूल्यपरक शिक्षा पहुँचाने की आवश्यकता बताइए। यह रूपरेखा विषय से भटकाव रोकती है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **विकास के लिए शिक्षा आवश्यक**
शिक्षा व्यक्ति और समाज के विकास का आधार है। यह केवल पढ़ना और लिखना नहीं सिखाती, बल्कि सोचने, समझने और सही निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करती है। शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों और कर्तव्यों को पहचानता है तथा जीवन की समस्याओं का विवेकपूर्ण समाधान खोजता है। शिक्षा से प्राप्त ज्ञान और कौशल रोजगार के अवसर बढ़ाते हैं और आर्थिक आत्मनिर्भरता लाते हैं। किसान आधुनिक तकनीक अपनाता है, उद्यमी नए प्रयोग करता है और नागरिक स्वास्थ्य तथा पर्यावरण के प्रति जागरूक बनता है। स्त्री शिक्षा परिवार और समाज दोनों को आगे बढ़ाती है। शिक्षा अंधविश्वास, भेदभाव और संकीर्णता से मुक्ति पाने में भी सहायता करती है। किंतु केवल प्रमाणपत्र प्राप्त करना पर्याप्त नहीं; शिक्षा गुणवत्तापूर्ण, व्यावहारिक और मूल्यपरक होनी चाहिए। समाज के हर बच्चे को समान शैक्षिक अवसर मिलें, तभी विकास व्यापक होगा। इसलिए विद्यालयों, प्रशिक्षित शिक्षकों और उपयोगी संसाधनों में निवेश करना राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य में निवेश करना है।

चरण 3: निष्कर्ष अनुच्छेद शिक्षा को व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता, सामाजिक समानता और राष्ट्रीय प्रगति से जोड़ते हुए सबके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का समर्थन करता है।

त्वरित सुझाव: विकास को केवल धन बढ़ने तक सीमित न रखें; शिक्षा का रोजगार, वैज्ञानिक सोच, समानता और जिम्मेदार नागरिकता से संबंध भी लिखें।

4. दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक को नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने का आग्रह करते हुए लगभग 150 शब्दों में पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, निवेदन, समापन और हस्ताक्षर क्रम से दिए जाते हैं।
- आग्रह का आधार स्पष्ट होना चाहिए। साहित्यिक कार्यक्रम का प्रस्ताव रखते समय उसकी सामग्री, दर्शकों के लिए उपयोगिता और प्रसारण का व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और उद्देश्य पत्र दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक को संबोधित होगा। विषय में नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने का आग्रह स्पष्ट लिखा जाएगा। भाषा विनम्र तथा औपचारिक रहेगी और मुख्य भाग लगभग 150 शब्दों का होगा। प्रेषक का परिचय और संपर्क-पता पत्र को पूर्ण बनाते हैं।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना पहले साहित्यिक कार्यक्रम की आवश्यकता बताई जाएगी। इसके बाद नई कविता, कहानी और अन्य विधाओं के पाठ, रचनाकारों से संवाद तथा आलोचनात्मक चर्चा का सुझाव दिया जाएगा। अंत में युवा दर्शकों को जोड़ने और सुविधाजनक समय पर नियमित प्रसारण करने का अनुरोध होगा। कार्यक्रम के प्रस्ताव को उपयोगी और व्यवहार्य बनाना पत्र का मुख्य लक्ष्य है।

चरण 3: आदर्श पत्र 25, अशोक विहार
दिल्ली–110052
15 मार्च, 2018
सेवा में,
निदेशक महोदय
दूरदर्शन केन्द्र
नई दिल्ली
विषय: नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने का आग्रह।

महोदय,
मैं आपके लोकप्रिय चैनल का नियमित दर्शक हूँ। आपके विविध कार्यक्रम ज्ञान और मनोरंजन प्रदान करते हैं। मेरा अनुरोध है कि नवीन साहित्यिक रचनाओं पर भी एक नियमित साप्ताहिक कार्यक्रम आरंभ किया जाए।
आज अनेक महत्त्वपूर्ण कविताएँ, कहानियाँ और उपन्यास प्रकाशित हो रहे हैं, किंतु सामान्य पाठक उनसे परिचित नहीं हो पाते। प्रस्तावित कार्यक्रम में नई पुस्तकों का परिचय, चुनिंदा रचनाओं का पाठ और लेखकों से बातचीत शामिल की जा सकती है। विशेषज्ञों की सरल समीक्षा रचनाओं की विशेषताएँ समझने में सहायक होगी। इससे दर्शकों की साहित्यिक रुचि बढ़ेगी तथा युवाओं को पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा मिलेगी।
कृपया नवोदित रचनाकारों और विभिन्न भारतीय भाषाओं की अनूदित रचनाओं को भी स्थान दें। दर्शकों के प्रश्न शामिल करने से कार्यक्रम अधिक रोचक बनेगा। इसका प्रसारण रविवार की संध्या को हो तो विद्यार्थी तथा अन्य दर्शक सहजता से इसे देख सकेंगे। आशा है, आप इस प्रस्ताव पर विचार कर शीघ्र कार्यवाही करेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय
अभय कुमार

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार पत्र में स्पष्ट आग्रह, कार्यक्रम की रूपरेखा और साहित्य के प्रति रुचि बढ़ाने का उद्देश्य औपचारिक तथा विनम्र भाषा में व्यक्त किया गया है।

त्वरित सुझाव: पत्र लिखने से पहले पता, दिनांक, विषय, संबोधन और समापन का क्रम तय कर लें; मुख्य भाग में आग्रह और उसका ठोस लाभ अवश्य बताएँ।

5(क). 'पेज थ्री पत्रकारिता' का आशय समझाइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पेज थ्री पत्रकारिता का संबंध प्रसिद्ध व्यक्तियों के निजी और सामाजिक जीवन तथा मनोरंजन-जगत की गतिविधियों से है।
- इस नाम का आशय समाचारों की विषयवस्तु से है; किसी समाचार का केवल तीसरे पृष्ठ पर छपना इसकी पर्याप्त पहचान नहीं है।

चरण 1: मुख्य विषय पहचानिए इसमें फिल्मी सितारों, फैशन-जगत और समाज की चर्चित हस्तियों की पार्टियों, समारोहों, रहन-सहन तथा निजी जीवन की खबरें प्रमुख होती हैं। आकर्षक तस्वीरें और हल्की-फुल्की प्रस्तुति इसकी सामान्य विशेषताएँ हैं।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर प्रसिद्ध व्यक्तियों की जीवनशैली, पार्टियों, फैशन और मनोरंजन-जगत की गतिविधियों को प्रमुखता देने वाली पत्रकारिता को पेज थ्री पत्रकारिता कहते हैं। इसका केंद्र मशहूर हस्तियों का सामाजिक और निजी जीवन होता है।

चरण 3: निष्कर्ष पेज थ्री पत्रकारिता मशहूर हस्तियों की जीवनशैली और सामाजिक गतिविधियों पर केंद्रित पत्रकारिता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मशहूर हस्तियाँ, उनकी जीवनशैली और सामाजिक समारोह लिखें; केवल समाचार-पत्र के तीसरे पृष्ठ का उल्लेख पर्याप्त नहीं है।

5(ख). अंशकालिक पत्रकार किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण उनके कार्य-समय और समाचार-संस्था के साथ संबंध के आधार पर भी होता है।
- अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संस्था के लिए सीमित समय में काम करता है; वह नियमित पूर्णकालिक कर्मचारी की तरह पूरे

समय नियुक्त नहीं होता।

चरण 1: काम करने का आधार अंशकालिक पत्रकार प्रायः अपने क्षेत्र की घटनाओं की जानकारी एकत्र कर समाचार-संस्था को भेजता है। पत्रकारिता के साथ वह कोई अन्य काम भी कर सकता है। उसकी पहचान सीमित समय की सेवाएँ हैं।

चरण 2: परिभाषा जो पत्रकार किसी समाचार-पत्र या अन्य समाचार-संस्था के लिए पूरे समय के बजाय आंशिक समय में समाचार-संकलन और प्रेषण का काम करता है, उसे अंशकालिक पत्रकार कहते हैं। उसे प्रायः स्ट्रिंगर भी कहा जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सीमित समय में किसी समाचार-संस्था के लिए समाचार जुटाने और भेजने वाला पत्रकार अंशकालिक पत्रकार है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में आंशिक समय और समाचार-संस्था के लिए काम करना दोनों लिखें; उसे केवल स्वतंत्र लेख लिखने वाला व्यक्ति न बताएँ।

5(ग). विशेषीकृत पत्रकारिता को संक्षेप में समझाइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषीकृत पत्रकारिता किसी निश्चित विषय या क्षेत्र की गहन जानकारी पर आधारित होती है।
- इसमें सामान्य घटनाविवरण के साथ विषय की पृष्ठभूमि, कारण, प्रभाव और संदर्भ का विशेषज्ञतापूर्ण विवेचन किया जाता है।

चरण 1: विशेषज्ञता का अर्थ अर्थव्यवस्था, विज्ञान, खेल, शिक्षा अथवा पर्यावरण जैसे क्षेत्रों की रिपोर्टिंग के लिए संबंधित विषय की समझ चाहिए। पत्रकार अपने अध्ययन और अनुभव से जटिल तथ्यों को सामान्य पाठकों के लिए सरल बनाता है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर किसी विशेष विषय या क्षेत्र का गहन अध्ययन कर उससे संबंधित समाचारों और मुद्दों का तथ्यपूर्ण, विश्लेषणात्मक लेखन करना विशेषीकृत पत्रकारिता कहलाता है। आर्थिक, वैज्ञानिक और खेल पत्रकारिता इसके उदाहरण हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विशेषीकृत पत्रकारिता किसी निश्चित क्षेत्र की विषयगत विशेषज्ञता पर आधारित गहन और विश्लेषणात्मक पत्रकारिता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में विशेष विषय के साथ गहन जानकारी और विश्लेषण जोड़ें; केवल किसी एक समाचार को विशेष बता देना पर्याप्त नहीं है।

5(घ). 'बीट' से आप क्या समझते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बीट समाचार-संग्रह के लिए किसी संवाददाता को नियमित रूप से सौंपा गया निश्चित क्षेत्र या विषय है।
- बीट भौगोलिक क्षेत्र भी हो सकता है और राजनीति, पुलिस, न्यायालय या शिक्षा जैसा विषयगत कार्यक्षेत्र भी हो सकता है।

चरण 1: कार्य-विभाजन समझिए समाचार-संस्था संवाददाताओं को अलग-अलग क्षेत्रों की जिम्मेदारी देती है। संवाददाता अपनी बीट में होने वाली घटनाओं पर नियमित नजर रखता है, स्रोतों से संपर्क बनाए रखता है और समाचार एकत्र करता है।

चरण 2: परिभाषा और उदाहरण पत्रकारिता में संवाददाता को समाचार-संकलन के लिए सौंपे गए निश्चित क्षेत्र या विषय को बीट कहते हैं। उदाहरण के लिए न्यायालय की गतिविधियों को नियमित रूप से कवर करना न्यायालय बीट का काम है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-संकलन के लिए पत्रकार को सौंपा गया निर्धारित विषय या क्षेत्र उसकी बीट कहलाता है।

त्वरित सुझाव: बीट का अर्थ बताते समय निश्चित जिम्मेदारी और नियमित समाचार-संकलन का उल्लेख करें; उदाहरण के लिए पुलिस या न्यायालय लिखें।

5(ङ). रेडियो की लोकप्रियता के क्या कारण हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य जनसंचार माध्यम है; उसकी उपयोगिता सरल उपलब्धता और व्यापक पहुँच में है।
- लोकप्रियता के कारण बताते समय श्रोता की सुविधा तथा कार्यक्रमों की विविधता का उल्लेख करना चाहिए।

चरण 1: पहुँच और सुविधा रेडियो सस्ता और आसानी से उपलब्ध माध्यम है। उसके कार्यक्रम सुनने के लिए पढ़ा-लिखा होना आवश्यक नहीं होता। उसे घर, खेत या यात्रा में दूसरे काम करते हुए भी सुना जा सकता है।

चरण 2: कार्यक्रमों का आकर्षण रेडियो पर समाचार, संगीत, मनोरंजन तथा उपयोगी सूचनाएँ सरल और बोलचाल की भाषा में मिलती हैं। दूरदराज़ के क्षेत्रों तक उसकी पहुँच और स्थानीय भाषाओं में प्रसारण भी उसे लोकप्रिय बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कम लागत, व्यापक पहुँच, सुनने की सहज सुविधा और विविध उपयोगी कार्यक्रम रेडियो की लोकप्रियता के प्रमुख कारण हैं।

त्वरित सुझाव: कारणों में सस्तापन, पहुँच और काम करते हुए सुनने की सुविधा को संक्षेप में अवश्य जोड़ें।

6(i). 'गाँव से मज़दूरों का पलायन' विषय पर लगभग 150 शब्दों में आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सामाजिक विषय के कारणों, प्रभावों और समाधान पर क्रमबद्ध विचार प्रस्तुत करता है।
- विषय के अनुरूप शीर्षक, लेखक का नाम और लगभग 150 शब्दों का विवेचन उपयुक्त है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की सीमा शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दें। आरंभ में पलायन की स्थिति स्पष्ट करें; मुख्य भाग में रोजगार, खेती और सुविधाओं से जुड़े कारण तथा परिवारों पर प्रभाव बताएँ। अंत में गाँव में अवसर बढ़ाने का व्यावहारिक सुझाव रखें।

चरण 2: विचारों का क्रम पलायन का अर्थ आजीविका के लिए गाँव छोड़कर शहर जाना है। इसे केवल व्यक्तिगत इच्छा न मानकर ग्रामीण रोजगार और बुनियादी सुविधाओं की कमी से जोड़ें। शहर में श्रमिकों की कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए ग्रामीण विकास को समाधान बनाएँ।

चरण 3: आलेख का नमूना गाँव से मज़दूरों का पलायन

लेखक: अजय कुमार

गाँवों से मज़दूरों का शहरों की ओर पलायन आज गंभीर सामाजिक समस्या है। खेतों में वर्षभर काम न मिलना, कम मजदूरी, खेती की बढ़ती लागत और कर्ज उन्हें घर छोड़ने पर विवश करते हैं। बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और नियमित आय की आशा भी शहरों की ओर खींचती है।

शहर पहुँचकर सभी के सपने पूरे नहीं होते। अनेक मज़दूर अस्थायी काम, महँगे किराए, अस्वच्छ बस्तियों और असुरक्षित परिस्थितियों में जीवन बिताते हैं। पीछे छूटे बच्चों, महिलाओं और बुज़ुर्गों पर अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ आती हैं। गाँव में खेती तथा स्थानीय उत्पादन भी प्रभावित होते हैं।

इस समस्या का समाधान ग्रामीण क्षेत्रों में सम्मानजनक आजीविका बढ़ाना है। सिंचाई, कुटीर उद्योग, कौशल प्रशिक्षण और रोजगार योजनाओं का प्रभावी संचालन आवश्यक है। उचित मजदूरी तथा अच्छी शिक्षा और चिकित्सा सुविधाएँ भी मिलें। जब गाँव में भविष्य सुरक्षित होगा, तब पलायन मजबूरी के स्थान पर स्वतंत्र विकल्प बन सकेगा।

चरण 4: निष्कर्ष इस आलेख में पलायन के कारण, मज़दूरों और गाँव पर उसके प्रभाव तथा स्थानीय रोजगार पर आधारित समाधान क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत हैं।

त्वरित सुझाव: लगभग 150 शब्दों के आलेख में कारण, प्रभाव और समाधान के लिए अलग छोटे अनुच्छेद रखें।

6(ii). हाल ही में पढ़ी यात्रा-वृत्तांतों की किसी पुस्तक की संतुलित समीक्षा लगभग 150 शब्दों में लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संतुलित समीक्षा में पुस्तक का परिचय, विषयवस्तु, भाषा और गुण-दोष का विवेचन होता है।
- यात्रा-वृत्तांत की समीक्षा यात्रा-वर्णन, परिवेश, अनुभव और पाठकीय उपयोगिता पर केंद्रित रखें।

चरण 1: समीक्षा का प्रारूप पुस्तक और लेखक का नाम स्पष्ट करें। संक्षिप्त परिचय के बाद विषयवस्तु, शैली और विशेषताओं पर टिप्पणी करें। संतुलन के लिए सीमाएँ भी बताएँ और अंत में उपयोगिता का आकलन दें। समीक्षा केवल पुस्तक की प्रशंसा या कहानी का सार न बने।

चरण 2: पुस्तक और मूल्यांकन के आधार राहुल सांकृत्यायन की यात्रा-पुस्तक 'मेरी तिब्बत यात्रा' को आधार बनाया गया है। लेखक के यात्रा-अनुभवों, तिब्बत के समाज और संस्कृति के परिचय तथा विवरणप्रधान शैली पर ध्यान देकर समीक्षा लिखें। सीमाओं की चर्चा पाठक के अनुभव के रूप में करें।

चरण 3: समीक्षा का नमूना अनुभव और जिज्ञासा की यात्रा

पुस्तक: मेरी तिब्बत यात्रा लेखक: राहुल सांकृत्यायन समीक्षक: अजय कुमार

हाल ही में पढ़ी 'मेरी तिब्बत यात्रा' एक रोचक और ज्ञानवर्धक यात्रा-पुस्तक है। राहुल सांकृत्यायन इसमें तिब्बत की यात्रा के अनुभवों के साथ वहाँ के जनजीवन, धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक परिवेश का परिचय देते हैं। उनका जिज्ञासु और साहसी व्यक्तित्व वर्णन को विशेष आकर्षण देता है।

पुस्तक की प्रमुख विशेषता लेखक की निरीक्षण-शक्ति है। वे केवल प्राकृतिक दृश्यों पर नहीं रुकते, बल्कि लोगों के रहन-सहन और व्यवहार को भी समझने का प्रयास करते हैं। भाषा प्रायः स्पष्ट और वर्णन सजीव है। पाठक को अपरिचित समाज के निकट आने तथा अपनी जानकारी का विस्तार करने का अवसर मिलता है।

फिर भी कुछ स्थानों पर विवरण की अधिकता सामान्य पाठक को धीमी लग सकती है। अपरिचित नामों और सांस्कृतिक संदर्भों को समझने के लिए सावधानी से पढ़ना पड़ता है। इन सीमाओं के बावजूद यह पुस्तक यात्रा, इतिहास और संस्कृति में रुचि रखने वालों के लिए उपयोगी है।

चरण 4: निष्कर्ष समीक्षा में पुस्तक का परिचय, यात्रा-वर्णन की विशेषताएँ, पाठकीय कठिनाइयाँ और समग्र उपयोगिता देकर संतुलित मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में लेखक और पुस्तक का नाम देकर कम-से-कम एक विशेषता तथा एक सीमा अवश्य स्पष्ट करें।

---

7. 'महानगरों में आवास की समस्या' विषय पर लगभग 150 शब्दों में फ़ीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में तथ्यात्मक विषय को मानवीय अनुभव, दृश्यात्मक आरंभ और रोचक भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।
- आवास की समस्या में महँगा किराया, सीमित स्थान, असुरक्षित बस्तियाँ और नियोजित आवास की आवश्यकता मुख्य बिंदु हैं।

चरण 1: प्रारूप और प्रस्तुति की योजना फ़ीचर को आकर्षक शीर्षक और लेखक के नाम से आरंभ करें। किसी परिचित महानगरीय दृश्य द्वारा समस्या का अनुभव कराएँ। उसके बाद रोज़गार के लिए आने वाली आबादी, महँगी भूमि और आय की तुलना में बढ़ते किराए का उल्लेख करें। अंत में व्यावहारिक उपाय और मानवीय संदेश दें।

चरण 2: विषय के विस्तार की योजना विषय का केंद्र घर तलाशने वाले साधारण व्यक्ति की कठिनाई है। इसलिए केवल ऊँची इमारतों का वर्णन पर्याप्त नहीं होगा। संकरी बस्तियों में पानी, हवा और स्वच्छता की कमी तथा दूर के घर से लंबी यात्रा का प्रभाव भी दिखाना चाहिए। समाधान में सस्ते किराए, नियोजित निर्माण और बेहतर सार्वजनिक परिवहन को जोड़ें। किसी अप्रमाणित आँकड़े की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: पूर्ण मॉडल फ़ीचर छत की तलाश में महानगर

लेखक: अजय

शाम ढलते ही चमकती बहुमंज़िली इमारतों के नीचे फुटपाथ पर बिस्तर बिछने लगते हैं। यही महानगर का विरोधाभास है: इमारतें बहुत हैं, पर सबके लिए घर नहीं।

रोज़गार और बेहतर भविष्य की आशा में लोग यहाँ आते हैं। बढ़ती आबादी, सीमित भूमि और महँगे मकानों के बीच साधारण वेतन पाने वाला परिवार किराए में ही अपनी बड़ी कमाई खर्च कर देता है। छोटी कोठरियों और अनियोजित बस्तियों में हवा, पानी तथा स्वच्छता तक का अभाव रहता है। दूर सस्ते घर मिलें भी तो लंबी यात्रा समय और स्वास्थ्य छीन लेती है। बच्चों की पढ़ाई और बुज़ुर्गों की देखभाल भी इससे प्रभावित होती है।

समाधान केवल नई इमारतें खड़ी करना नहीं है। सस्ते किराए के आवास, योजनाबद्ध निर्माण, बुनियादी सुविधाएँ और बेहतर सार्वजनिक परिवहन आवश्यक हैं। आवास योजनाएँ ज़रूरतमंदों तक पहुँचें। महानगर की असली प्रगति तभी होगी, जब उसे बनाने वाले हाथों को भी सुरक्षित छत मिलेगी।

चरण 4: निष्कर्ष यह फ़ीचर मानवीय दृश्य से आरंभ होकर आवास की समस्या, उसके प्रभाव और संभावित समाधान को लगभग 150 शब्दों के मॉडल में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर में समस्या को किसी जीवंत दृश्य से जोड़ें और अंत में उसी मानवीय चिंता को समाधान के साथ पूरा करें।

8(क). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
प्रश्न (क): किसके बच्चों की बात की गई है, वे नीड़ों से क्यों झाँक रहे हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत पंक्तियों में नीड़ पक्षियों के घोंसले हैं और बच्चे चिड़ियों के शिशु हैं।
- प्रत्याशा का भाव बच्चों की प्रतीक्षा और माँ की घर लौटने की उत्सुकता को जोड़ता है।

चरण 1: बच्चों की पहचान इन पंक्तियों में चिड़ियों के बच्चों की बात की गई है। वे अपने नीड़ों, अर्थात घोंसलों, में हैं। इसलिए यहाँ बच्चे शब्द का संबंध मनुष्य के बच्चों से नहीं, पक्षी-शिशुओं से है। चिड़ियों के परों और नीड़ों का उल्लेख इसी अर्थ को स्पष्ट करता है।

चरण 2: झाँकने का कारण दिन ढल रहा है और बच्चे अपनी माँ के लौटने की आशा में घोंसलों से बाहर झाँक रहे हैं। वे उससे मिलने और भोजन पाने के लिए उत्सुक हैं। उनकी यह प्रतीक्षा वात्सल्य का दृश्य बनाती है। बच्चों का ध्यान आते ही चिड़ियों के परों में चंचलता भर जाती है, क्योंकि वे शीघ्र अपने बच्चों तक पहुँचना चाहती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष चिड़ियों के बच्चे अपनी माँ के लौटने और भोजन मिलने की प्रतीक्षा में नीड़ों से झाँक रहे हैं।

त्वरित सुझाव: नीड़ और पर जैसे शब्दों को साथ पढ़ने से बच्चों की पहचान तथा उनकी प्रतीक्षा का कारण तुरंत स्पष्ट होता है।

8(ख). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
प्रश्न (ख): चिड़ियों की उड़ान में गति आने और कवि के शिथिल क़दमों के क्या कारण हो सकते हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी अपने की प्रतीक्षा का बोध उत्साह और गति देता है।
- कवि का प्रश्न उसके अकेलेपन को व्यक्त करता है और चिड़ियों के उत्साह से विरोध प्रस्तुत करता है।

चरण 1: चिड़ियों की गति का कारण चिड़ियों को लगता है कि उनके बच्चे घोंसलों में उनकी राह देख रहे होंगे। बच्चों से मिलने और उन्हें भोजन देने की आतुरता उनके परों में चंचलता भर देती है। ढलता दिन शीघ्र घर पहुँचने की आवश्यकता भी बढ़ाता है। इस प्रकार स्नेहपूर्ण संबंध और मिलने का उद्देश्य उनकी उड़ान को तेज़ करते हैं।

चरण 2: कवि के कदमों की शिथिलता इसके विपरीत कवि सोचता है कि उससे मिलने के लिए कौन व्याकुल होगा और वह किसके लिए उत्साह से लौटे। उसे किसी अपने की प्रतीक्षा का आश्वासन नहीं मिलता। यही अकेलापन तथा प्रियजन के अभाव का बोध उसके मन को विह्वल और कदमों को शिथिल करता है। अंश में शिथिलता का कारण शारीरिक थकान से अधिक यह मानसिक उदासी है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों की प्रतीक्षा और उनसे मिलने की उत्कंठा चिड़ियों को गति देती है; किसी अपने की प्रतीक्षा के अभाव का बोध कवि के कदम धीमे कर देता है।

त्वरित सुझाव: दोनों स्थितियों का उत्तर साथ लिखें: चिड़ियों के पास मिलने का उद्देश्य है, कवि को उसी उद्देश्य का अभाव खलता है।

8(ग). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
प्रश्न (ग): कवि अपने आप से क्या प्रश्न करता है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मप्रश्न द्वारा कवि अपने भीतर की व्यथा और एकाकीपन व्यक्त करता है।
- चिड़ियों की घर लौटने की उत्सुकता देखकर कवि अपने जीवन में ऐसे संबंध का अभाव अनुभव करता है।

चरण 1: कवि के प्रश्न स्पष्ट करना कवि अपने आप से पूछता है, 'मुझसे मिलने को कौन विकल?' और 'मैं होऊँ किसके हित चंचल?'

अर्थात उससे मिलने के लिए कौन व्याकुल है और वह किसके लिए उत्साह से आगे बढ़े। दोनों प्रश्न उसके लौटने के उद्देश्य और आत्मीय संबंध की तलाश को व्यक्त करते हैं।

चरण 2: प्रश्न करने का कारण चिड़ियाँ अपने बच्चों की प्रतीक्षा का ध्यान करके तेज़ी से घर लौटती हैं। उनकी यह उत्सुकता कवि को अपनी स्थिति पर सोचने को विवश करती है। उसे लगता है कि उसकी राह देखने वाला कोई आत्मीय नहीं है। इसीलिए वह स्वयं से ये प्रश्न करता है। उनका उत्तर न मिलने से उसके मन में विह्वलता आती है और उसके कदम धीमे पड़ जाते हैं। यहाँ किसी व्यक्ति विशेष की पहचान करने के बजाय कवि की अकेलेपन की अनुभूति समझना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि पूछता है कि उससे मिलने को कौन व्याकुल है और वह किसके लिए उत्साहित हो। आत्मीय प्रतीक्षा के अभाव तथा अकेलेपन का अनुभव इन प्रश्नों का कारण है।

त्वरित सुझाव: क्या और क्यों को अलग रखें: पहले दोनों आत्मप्रश्न लिखें, फिर चिड़ियों की प्रतीक्षा से उभरता कवि का अकेलापन समझाएँ।

8(घ). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
प्रश्न (घ): 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' – कथन की आवृत्ति क्या संकेत करती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए काव्यांश के शब्दों, प्रतीकों और प्रसंग के आधार पर देना चाहिए।
- काव्यगत संकेत का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसे कवि की अनुभूति और अभिव्यक्ति से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: आवृत्ति का संकेत 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' की आवृत्ति समय के निरंतर और तीव्र गति से बीतने का बोध कराती है। संध्या निकट आने पर अपने लक्ष्य या घर तक पहुँचने की आकुलता बढ़ती है। बार-बार लौटती यह पंक्ति जीवन की सीमित अवधि का भी स्मरण कराती है।

चरण 2: प्रसंग से भाव स्पष्ट करना बच्चों की प्रतीक्षा का ध्यान चिड़ियों के परों में चंचलता भर देता है; वे अँधेरा होने से पहले नीड़ों में पहुँचना चाहती हैं। इसके विपरीत कवि को लगता है कि उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं है। इसलिए वही ढलता दिन उसके अकेलेपन और हृदय की विह्वलता को अधिक तीव्र करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस आवृत्ति में समय के तेजी से बीतने की चेतना तथा प्रियजनों से मिलने की आकुलता और कवि के अकेलेपन की व्यथा व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: आवृत्ति का अर्थ बताते समय चिड़ियों की उत्सुकता और कवि की उदासी, दोनों को ढलते दिन से जोड़ें।

अथवा

8(क). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
(अथवा) प्रश्न (क): छोटे खेत और काग़ज़ का रूपक समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए काव्यांश के शब्दों, प्रतीकों और प्रसंग के आधार पर देना चाहिए।
- काव्यगत संकेत का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसे कवि की अनुभूति और अभिव्यक्ति से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: खेत और पन्ने का संबंध कवि ने काग़ज़ के चौकोर पन्ने को अपना छोटा खेत कहा है। जिस प्रकार किसान खेत में बीज बोकर फसल उगाता है, उसी प्रकार कवि काग़ज़ पर अपने मन में जन्मे भाव और विचारों को शब्द देता है। यहाँ खेत और काग़ज़ को एक रूप देकर कविता की रचना-प्रक्रिया समझाई गई है।

चरण 2: रूपक का विस्तार खेत में बीज से अंकुर, पत्ते और फूल निकलते हैं। कविता में क्षण की अनुभूति बीज है, कल्पना उसे विकसित करती है और शब्द उसके अंकुर बनते हैं। इस प्रकार किसान की खेती और कवि की सर्जना के बीच समानता स्थापित होती है; काग़ज़ का पन्ना भावों की फसल उगाने वाला खेत बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष छोटा खेत काग़ज़ के चौकोर पन्ने का रूपक है, जिसमें अनुभूति के बीज से कल्पना और शब्दों के सहारे कविता की फसल तैयार होती है।

त्वरित सुझाव: रूपक समझाते हुए केवल आकार की समानता न लिखें; खेत की खेती और पन्ने पर काव्य-सृजन का संबंध भी बताएँ।

8(ख). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
(अथवा) प्रश्न (ख): रचना के संदर्भ में 'अंधड़' और 'बीज' से आप क्या समझते हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए काव्यांश के शब्दों, प्रतीकों और प्रसंग के आधार पर देना चाहिए।

- काव्यगत संकेत का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसे कवि की अनुभूति और अभिव्यक्ति से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: अंधड़ का आशय रचना के संदर्भ में 'अंधड़' कवि के मन में अचानक उठने वाले भावों के प्रबल आवेग या प्रेरणा का प्रतीक है। जैसे अंधड़ अप्रत्याशित रूप से आता है, वैसे ही कोई घटना, दृश्य या अनुभव कवि के भीतर तीव्र हलचल उत्पन्न कर देता है और रचना की प्रेरणा बनता है।

चरण 2: बीज का आशय 'बीज' उस क्षण की मूल अनुभूति, विचार या भाव का प्रतीक है जिससे कविता जन्म लेती है। भावों के आवेग से यह अनुभूति कवि के मन में स्थापित होती है। आगे कल्पना उसे विकसित करती है और वह शब्दों के रूप में अभिव्यक्त होकर काव्य का रूप लेती है, जैसे बीज से पौधा उगता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंधड़ भावों की आकस्मिक तीव्र प्रेरणा है और बीज उस प्रेरणा से प्राप्त मूल अनुभूति या विचार है, जिससे काव्य-सृजन आरंभ होता है।

त्वरित सुझाव: अंधड़ को भावों का आवेग और बीज को मूल अनुभूति लिखें; दोनों को तैयार कविता के समान न मानें।

8(ग). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
(अथवा) प्रश्न (ग): कल्पना को रसायन क्यों कहा गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए काव्यांश के शब्दों, प्रतीकों और प्रसंग के आधार पर देना चाहिए।
- काव्यगत संकेत का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसे कवि की अनुभूति और अभिव्यक्ति से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: रसायन की उपमा का आधार कृषि में पोषक रसायन बीज के अंकुरण और पौधे की वृद्धि में सहायक होते हैं। इसी प्रकार कविता में कल्पना मूल अनुभूति को पोषण देती है। वह साधारण अनुभव के भीतर छिपी संभावनाओं को खोलकर उसे नए रूप, संबंध और अर्थ प्रदान करती है।

चरण 2: अनुभूति से कविता तक कवि के मन में आया क्षण का बीज कल्पना के प्रभाव से अपना स्वतंत्र रूप खोकर रचना में समा जाता है। उससे शब्दों के अंकुर तथा भावों और अभिव्यक्तियों के पल्लव-पुष्प विकसित होते हैं। कल्पना अनुभव को मात्र दोहराती नहीं, बल्कि उसे कलात्मक और प्रभावशाली कविता में बदलती है। इसी परिवर्तनकारी और पोषक शक्ति के कारण उसे रसायन कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष कल्पना अनुभूति के बीज को पोषित और रूपांतरित करके सुंदर कविता में विकसित करती है; इसलिए उसे रसायन कहा गया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में रसायन की पोषणकारी शक्ति को कल्पना की अनुभूति विकसित करने वाली शक्ति से स्पष्ट रूप से जोड़ें।

8(घ). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
(अथवा) प्रश्न (घ): 'पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए काव्यांश के शब्दों, प्रतीकों और प्रसंग के आधार पर देना चाहिए।
- काव्यगत संकेत का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसे कवि की अनुभूति और अभिव्यक्ति से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: प्रतीकों का अर्थ 'पल्लव-पुष्पों' से आशय रचना में विकसित सुंदर भावों, बिंबों और कलात्मक अभिव्यक्तियों से है। जैसे अंकुर बढ़कर पत्तों और फूलों से युक्त पौधा बनता है, वैसे ही कल्पना से पोषित अनुभूति शब्दों में ढलकर आकर्षक कविता का रूप लेती है।

चरण 2: नमित होने का भाव 'नमित' का अर्थ झुका हुआ है। पत्तों और फूलों से भरपूर पौधे के झुकने की तरह कवि का काग़ज़ रूपी खेत भी भाव-सौंदर्य और शब्द-सौंदर्य से समृद्ध हो जाता है। पंक्ति रचना के पूर्ण विकसित, सुंदर और अर्थपूर्ण होने की स्थिति व्यक्त करती है। आरंभ में बोया गया छोटा-सा अनुभूति का बीज अब कल्पना और शब्दों की सहायता से संपन्न काव्य बन चुका है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति का भाव है कि अनुभूति से जन्मी कविता सुंदर भावों, बिंबों और शब्दों से इतनी समृद्ध हो गई है, जैसे पौधा पत्तों और फूलों से लदकर झुक गया हो।

त्वरित सुझाव: पल्लव-पुष्प का अर्थ केवल वास्तविक पत्ते-फूल न लिखें; उन्हें कविता की भाव-संपन्नता और कलात्मक सुंदरता से जोड़ें।

9(क). आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।
प्रश्न (क): काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा पर टिप्पणी करते समय शब्दों की सहजता, बोलचाल के प्रयोग और दृश्य को सजीव बनाने की क्षमता देखी जाती है।
- काव्यांश में घरेलू जीवन के परिचित शब्द वात्सल्य की अनुभूति को पाठक के निकट लाते हैं।

चरण 1: सहज और लोकजीवन से जुड़ी भाषा फ़िराक़ की इस रुबाई की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और बोलचाल के निकट है। 'आँगन', 'हाथों', 'गोद' और 'बच्चे' जैसे परिचित शब्द माँ और शिशु के घरेलू संसार को सहज रूप में प्रस्तुत करते हैं। 'लोका देती है' जैसा लोक-प्रचलित प्रयोग बच्चे को हवा में उछालने की क्रिया को सजीव बनाता है। भाषा में अनावश्यक कठिन शब्दों का बोझ नहीं है।

चरण 2: चित्रात्मकता और ध्वनि-सौंदर्य 'चाँद के टुकड़े' में बालक की सुंदरता का काव्यात्मक संकेत है। 'झुलाती', 'लोका देती' और 'खिलखिलाते' शब्द क्रमश: गति और ध्वनि का अनुभव कराते हैं। 'रह-रह' की पुनरावृत्ति से माँ के बार-बार उछालने की लय उभरती है। इस प्रकार सहज हिंदुस्तानी शब्दावली चित्रात्मक, संगीतात्मक और भावानुकूल हो गई है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा सहज हिंदुस्तानी, लोकजीवन से जुड़ी, लयात्मक और चित्रात्मक है; वह माँ-बच्चे के वात्सल्य को प्रभावपूर्ण बनाती है।

त्वरित सुझाव: भाषा की विशेषता बताते समय 'लोका देती' तथा 'खिलखिलाते' जैसे शब्दों से उसका उदाहरण भी जोड़ें।

9(ख). आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।
प्रश्न (ख): काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में दृश्य से प्रकट मानवीय अनुभूति और पात्रों के आत्मीय संबंध को स्पष्ट किया जाता है।
- माँ की स्नेहमयी क्रिया और शिशु की स्वाभाविक हँसी इस रुबाई में वात्सल्य की अभिव्यक्ति करते हैं।

चरण 1: माँ का स्नेह और बच्चे का सौंदर्य आँगन में खड़ी माँ अपने सुंदर बच्चे को गोद में लिए हुए है। उसे 'चाँद का टुकड़ा' कहना बालक के आकर्षक रूप और माँ की दृष्टि में उसके अनमोल होने का संकेत है। गोद में भरना और हाथों पर झुलाना माँ के कोमल स्नेह, ममता तथा बच्चे को सुख देने की इच्छा को व्यक्त करता है। यह साधारण घरेलू दृश्य गहरी आत्मीयता से भर उठता है।

चरण 2: हँसी से प्रकट आनंद और विश्वास माँ जब बच्चे को बार-बार हवा में उछालती है, तो बच्चा डरने के स्थान पर खिलखिलाकर हँसता है। उसकी हँसी माँ की गोद में मिलने वाली सुरक्षा और आनंद को व्यक्त करती है। उस निर्मल हँसी से पूरा आँगन गूँज उठता है और माँ-बच्चे का उल्लास वातावरण में फैल जाता है। बालसुलभ निश्छलता तथा मातृत्व का यह सहज मेल काव्यांश का मुख्य भाव-सौंदर्य है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में वात्सल्य का मधुर चित्र है: माँ की ममता, बच्चे का विश्वास और उसकी निष्कपट हँसी मिलकर घरेलू जीवन को आनंद से भर देते हैं।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य लिखते समय माँ की ममता और बच्चे की निश्छल खुशी को दृश्य की दो अलग क्रियाओं से जोड़ें।

9(ग). आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।
प्रश्न (ग): प्रयुक्त आलंकारिक सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय और उपमान को अलग न रखकर एक मान लिया जाता है।
- एक ही शब्द की सार्थक पुनरावृत्ति से पुनरुक्ति-प्रकाश का सौंदर्य उत्पन्न होता है।

चरण 1: चाँद के टुकड़े में रूपक 'चाँद के टुकड़े' में सुंदर बच्चे को सीधे चाँद का टुकड़ा कहा गया है। यहाँ बच्चा उपमेय है और चाँद का टुकड़ा उपमान; दोनों में अभेद स्थापित किया गया है। 'जैसा' या 'के समान' जैसे तुलना-सूचक शब्द नहीं हैं, इसलिए यह रूपक अलंकार है। इस प्रयोग से बालक की सुंदरता, कोमलता और माँ को उसकी प्रियता प्रभावशाली बनती है।

चरण 2: पुनरावृत्ति का लयात्मक प्रभाव 'रह-रह' में एक ही शब्द की पुनरावृत्ति होने से पुनरुक्ति-प्रकाश अलंकार है। यह केवल ध्वनि की सजावट नहीं करता, बल्कि माँ द्वारा बच्चे को बार-बार हवा में उछालने की क्रिया को भी व्यक्त करता है। इस पुनरावृत्ति से दृश्य में गति तथा लय आती है। रूपक बच्चे का मनोहर रूप उभारता है और पुनरुक्ति-प्रकाश माँ-बच्चे के खेल को सजीव बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में 'चाँद के टुकड़े' का रूपक और 'रह-रह' का पुनरुक्ति-प्रकाश अलंकार प्रमुख हैं; दोनों वात्सल्यपूर्ण दृश्य का आकर्षण बढ़ाते हैं।

त्वरित सुझाव: रूपक की पहचान के लिए सीधे आरोप पर ध्यान दें; 'रह-रह' में शब्द की पुनरावृत्ति को अलग समझाएँ।

10(क). कवितावली से आपकी पाठ्य-पुस्तक में उद्धृत छंदों के आधार पर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमताओं की अच्छी समझ है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की कवितावली के उद्धृत छंद जीविका-संकट, भूख और सामाजिक विषमता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं।
- सोदाहरण उत्तर में किसान, व्यापारी और श्रमिक की दशा को पाठ के शब्दों से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: विभिन्न वर्गों के जीविका-संकट का चित्र तुलसीदास लिखते हैं, 'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख' और 'बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी'। इससे स्पष्ट होता है कि किसान को खेती से निर्वाह नहीं मिलता, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी का व्यापार ठप है और नौकरी चाहने वाले को काम नहीं मिलता। संकट किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं, बल्कि अनेक सामाजिक वर्गों तक फैला है। 'जीविका बिहीन लोग' तथा 'कहाँ जाई, का करी' उस व्यापक असहायता को उजागर करते हैं जिसमें मेहनत करने की इच्छा होने पर भी आजीविका नहीं मिलती।

चरण 2: पेट की आग और विवश मनुष्य कवि किसानों, व्यापारियों, भिखारियों, सेवकों और कलाकारों की गतिविधियों के पीछे पेट भरने की मजबूरी देखते हैं। 'ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि' से पता चलता है कि भूख मनुष्य को उचित-अनुचित सब प्रकार के कामों के लिए विवश करती है। 'बेचत बेटा-बेटकी' जैसी स्थिति आर्थिक संकट की भयावहता दर्शाती है: जीविका का अभाव पारिवारिक संबंधों और मानवीय मूल्यों को भी तोड़ देता है।

चरण 3: युग की आर्थिक स्थिति की गहरी समझ 'आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेट की' कहकर तुलसीदास भूख की असहनीयता को व्यक्त करते हैं। वे दरिद्रता को केवल निजी दुर्भाग्य नहीं मानते, बल्कि समाज में फैले ऐसे संकट के रूप में चित्रित करते हैं जो व्यवसाय, श्रम और नैतिक जीवन को प्रभावित करता है। विभिन्न वर्गों की ठोस दशाओं का उल्लेख और उनके दुख के प्रति करुणा प्रमाणित करती है कि उन्हें अपने युग की आर्थिक विषमताओं और उनके मानवीय परिणामों की गहरी समझ थी।

चरण 4: निष्कर्ष तुलसीदास ने बेरोजगारी, आजीविका के अभाव और भूख से उत्पन्न सामाजिक विवशता का यथार्थ चित्र देकर अपने युग की आर्थिक विषमताओं की गहरी समझ दिखाई है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल गरीबी का उल्लेख न करें; खेती, व्यापार, चाकरी और पेट की आग के पाठगत उदाहरण जोड़ें।

10(ख). 'कविता के बहाने' कविता में कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बच्चे की मुक्त कल्पना कविता की असीम सृजनशीलता को समझने का आधार बनती है।
- कविता और बालमन की समानता उनकी सहजता, निर्बंध खेल और भेदभाव से मुक्त आत्मीयता में है।

चरण 1: सीमाओं से मुक्त कल्पना कवि कविता को बच्चों के खेल के समान मानते हैं, क्योंकि बच्चे कल्पना करते समय व्यावहारिक

सीमाओं में नहीं बँधते। वे खेल में किसी भी वस्तु को नया अर्थ दे सकते हैं और अपने लिए नया संसार बना लेते हैं। इसी तरह कविता भाषा और कल्पना के माध्यम से अनुभव का विस्तार करती है। उसका संसार किसी निश्चित स्थान, उपयोग या बाहरी सीमा में समाप्त नहीं होता। दोनों में स्वतंत्र सृजन की संभावना बनी रहती है।

चरण 2: भेदभाव से परे आत्मीयता बच्चों के लिए खेल का आनंद अपने-पराए के कठोर भेद से अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। कविता का 'सब घर एक कर देने' का भाव इसी समानता को सामने लाता है। कविता भी मनुष्यों के बीच बने अंतर कम करके उन्हें साझा अनुभव और संवेदना से जोड़ती है। वह किसी एक घर, व्यक्ति या संकीर्ण समूह की सीमा में नहीं रहती; पाठक अलग पृष्ठभूमि के होते हुए भी उसके भावों में सहभागी बन सकते हैं।

चरण 3: सहज आनंद और निरंतर संभावना बच्चे का खेल अपने आनंद के कारण चलता है; उसमें निष्कपट उत्साह और हर बार कुछ नया रचने की क्षमता होती है। कविता में भी सृजन का ऐसा ही सहज आनंद है। 'बच्चे के बहाने' कविता की बात करना उसकी जीवंतता और असीम संभावनाओं को प्रकट करता है। इसलिए बच्चे और कविता को समानांतर रखकर कवि समझाते हैं कि कविता को बँधे हुए अर्थ या सीमित प्रयोजन में कैद नहीं किया जा सकता।

चरण 4: निष्कर्ष कविता और बच्चे दोनों मुक्त कल्पना, सहज आनंद, भेदभावरहित अपनत्व और असीम सृजनशीलता के प्रतीक हैं; इसी समानता के कारण कवि ने उन्हें समानांतर रखा है।

त्वरित सुझाव: 'सब घर एक कर देने' को आधार बनाकर स्वतंत्र कल्पना, अपनत्व और सृजन के आनंद की तीन समानताएँ स्पष्ट करें।

10(ग). बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को 'बादल राग' कविता रेखांकित करती है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में वर्षा के बादलों का आगमन प्रकृति को गति, उल्लास और नए जीवन से भर देता है।
- प्रकृति के छोटे-बड़े उपादानों की भिन्न प्रतिक्रियाओं से कविता का क्रांति और नवजीवन का संकेत भी स्पष्ट होता है।

चरण 1: आकाश और धरती का बदलता रूप बादलों के आने से आकाश में घनघोर गर्जना होती है और बार-बार बिजली चमकती है। वायु में गति और वातावरण में हलचल भर जाती है। बादलों के वज्र-जैसे घोष से संसार का हृदय काँप उठता है। वर्षा की जलधारा झुलसी हुई धरती की प्यास बुझाती है और नए जीवन की संभावना जगाती है। इस प्रकार स्थिर और सूखे वातावरण का स्थान सक्रिय, वर्षामय वातावरण ले लेता है।

चरण 2: अंकुरों और पौधों में उल्लास पृथ्वी के भीतर सोए हुए अंकुर बादलों के आने से जाग उठते हैं और बाहर निकलने को उत्सुक होते हैं। छोटे पौधे हरे-भरे होकर हिलते हैं और मानो हाथ हिलाकर बादलों को बुलाते हैं। विप्लव की ध्वनि सुनकर ये छोटे पौधे प्रसन्न होते हैं; उनमें भय के स्थान पर विकास की आशा है। प्रकृति का यह चित्र वर्षा से मिलने वाली उर्वरता, हरियाली और सृजन-शक्ति को उभारता है।

चरण 3: विशाल वृक्षों का डोलना प्रचंड गर्जना और वज्रपात से बड़े पर्वत तथा ऊँचे वृक्ष भी प्रभावित होते हैं। उनकी स्थिरता टूटती है और वे आहत होकर गिरते हैं। इसके विपरीत छोटे पौधे और अंकुर नए जीवन का स्वागत करते हैं। यह अंतर दिखाता है कि बादलों का आगमन एक ओर पुराने जड़ रूपों को झकझोरता है, दूसरी ओर धरती के दबे हुए जीवन को आगे बढ़ने का अवसर देता है।

चरण 4: निष्कर्ष बादलों से आकाश गर्जना और बिजली से भरता है, धरती वर्षा से तृप्त होती है, अंकुर फूटते और छोटे पौधे हरे-भरे होकर झूमते हैं; साथ ही बड़े वृक्ष और पर्वत वज्रपात से विचलित होते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में आकाश, धरती, छोटे पौधों और बड़े वृक्षों के परिवर्तन अलग-अलग लिखें तथा छोटे पौधों के उल्लास का उल्लेख अवश्य करें।

11(क). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (क): 'बाज़ार में एक जादू है' कथन का क्या आशय है? यह जादू कैसे काम करता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह अंश वस्तुओं के बाहरी रूप से उत्पन्न आकर्षण और उपभोक्ता के विवेक की परीक्षा करता है।
- जादू का आशय किसी अलौकिक घटना से नहीं, बल्कि आँखों से होकर मन पर पड़ने वाले प्रभाव से है।

चरण 1: जादू का आशय बाज़ार में सजी हुई आकर्षक वस्तुएँ मनुष्य को अपनी ओर खींचती हैं। उनकी चमक-दमक और सुंदर प्रस्तुति देखकर उसे लगता है कि वे सभी उसके लिए उपयोगी हैं और उसका आराम बढ़ाएँगी। लेखक ने इसी सम्मोहक आकर्षण को बाज़ार का जादू कहा है। वस्तु की वास्तविक आवश्यकता पर विचार करने के पहले ही उसका रूप मन को लुभा लेता है।

चरण 2: आँख से मन तक प्रभाव यह जादू आँख की राह काम करता है। व्यक्ति वस्तु को देखता है और उसके मन में उसे पाने की इच्छा जागती है। यदि मन में अपनी जरूरतों का स्पष्ट बोध नहीं हो, तो अनेक वस्तुओं का निमंत्रण उसे प्रभावित कर देता है। जेब भरी होने पर वह तुरंत खरीदने को भी तैयार हो जाता है। इसलिए यह रूप का प्रभाव है जो इच्छा और खरीदारी को उकसाता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू वस्तुओं की सुंदर सजावट का सम्मोहक आकर्षण है; वह आँखों से मन में प्रवेश करके अनावश्यक वस्तुओं को भी जरूरी बनाकर दिखाता है।

त्वरित सुझाव: जादू का अर्थ बताते समय रूप का आकर्षण और आँख से मन तक पहुँचने की प्रक्रिया दोनों स्पष्ट करें।

11(ख). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (ख): इस जादू की मर्यादा क्या है? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अंश में चुंबक और लोहे की तुलना बाज़ार के प्रभाव की सीमित पहुँच समझाती है।
- अपनी आवश्यकता का स्पष्ट बोध रखने वाला भरा हुआ मन बाहरी आकर्षण से आसानी से नहीं डिगता।

चरण 1: चुंबक की तुलना समझें जैसे चुंबक हर पदार्थ को नहीं खींचता, केवल लोहे को खींचता है, वैसे ही बाज़ार का जादू सभी व्यक्तियों पर समान रूप से नहीं चलता। उसे प्रभाव डालने के लिए ऐसा मन चाहिए जिसमें अपनी आवश्यकताओं का स्पष्ट निर्णय और संतोष न हो। इसलिए वस्तुओं की सुंदरता मात्र से हर देखने वाला खरीदार नहीं बन जाता।

चरण 2: मन की दशा से सीमा बताएँ खाली मन अनेक वस्तुओं का निमंत्रण स्वीकार कर लेता है। इसके विपरीत जिस व्यक्ति का मन अपने उद्देश्य और वास्तविक जरूरतों के बोध से भरा है, वह हर चमकती वस्तु को आवश्यक नहीं मानता। जेब में पैसा होना आकर्षण को खरीद में बदल सकता है, पर जादू की मूल सीमा मन की ग्रहणशीलता है। केवल खाली जेब को ही इस जादू की सीमा मानना सही नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष इस जादू की मर्यादा यह है कि वह मुख्यतः खाली और अनिश्चित मन पर चलता है; जरूरतों का स्पष्ट बोध रखने वाले भरे मन पर उसका प्रभाव नहीं पड़ता।

त्वरित सुझाव: मर्यादा के उत्तर में चुंबक-लोहा की तुलना जोड़ें और पैसे की अपेक्षा मन की स्थिति को मुख्य आधार बनाएँ।

11(ग). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (ग): मन ख़ाली होने का क्या अर्थ है? इसका परिणाम क्या होता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यहाँ खाली मन का संबंध वास्तविक आवश्यकताओं के स्पष्ट बोध के अभाव से है।
- वस्तुओं के बाहरी आकर्षण से उत्पन्न इच्छाएँ जरूरत और अनावश्यक खरीद का अंतर मिटा सकती हैं।

चरण 1: खाली मन का अर्थ मन खाली होने का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी वास्तविक आवश्यकताओं और खरीदारी के उद्देश्य के बारे में निश्चित नहीं है। उसके पास ऐसा स्पष्ट विवेकपूर्ण निर्णय नहीं है जो बताए कि उसे क्या चाहिए और क्या नहीं चाहिए। इसलिए बाज़ार की वस्तुओं के आकर्षण का विरोध करने वाला आंतरिक आधार कमजोर रहता है। इसका आशय केवल धन का अभाव नहीं है।

चरण 2: उसका परिणाम ऐसे मन तक बाज़ार की अनेकानेक वस्तुओं का निमंत्रण पहुँच जाता है। हर आकर्षक वस्तु जरूरी और आराम बढ़ाने वाली लगती है तथा व्यक्ति सोचता है कि यह भी ले लूँ और वह भी। यदि उसी समय जेब भी भरी हो, तो वह अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने को तत्पर हो जाता है। इस तरह अनिश्चित मन में बढ़ती इच्छाएँ जरूरत की सीमा को पीछे छोड़ देती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष खाली मन अपनी जरूरतों के स्पष्ट बोध से रहित मन है। इसके कारण व्यक्ति बाज़ार की अनेक वस्तुओं से आकर्षित होकर उन्हें पाने और अनावश्यक खरीदारी करने को प्रेरित होता है।

त्वरित सुझाव: खाली मन को खाली जेब न समझें; पहले जरूरतों की अनिश्चितता बताएँ, फिर उससे उत्पन्न अनेक खरीद-इच्छाओं का परिणाम लिखें।

11(घ). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (घ): मन पर जादू का असर कब और कैसे दिखाई देता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अंश में मन की अनिश्चितता और भरी जेब का मेल बाज़ार के प्रभाव को तीव्र करता है।
- प्रभाव का प्रत्यक्ष संकेत हर वस्तु को जरूरी मानना तथा उसे खरीदने की आतुरता है।

चरण 1: प्रभाव पड़ने की स्थिति मन पर बाज़ार का जादू विशेष रूप से तब चलता है जब मन खाली और जेब भरी हो। खाली मन अपनी वास्तविक जरूरतें तय नहीं कर पाता, इसलिए वस्तुओं की सजावट और सुंदर रूप उसे आसानी से प्रभावित करते हैं। अंश यह भी बताता है कि जेब खाली होने पर भी यदि मन भरा नहीं है, तो आकर्षण पैदा हो सकता है; धन की उपलब्धता उसे अधिक बल देती है।

चरण 2: प्रभाव की अभिव्यक्ति जादू के प्रभाव में व्यक्ति को बाज़ार का प्रत्येक सामान उपयोगी और आराम बढ़ाने वाला लगता है। वह एक वस्तु देखकर रुकता नहीं, बल्कि यह भी लूँ और वह भी लूँ की इच्छा करने लगता है। भरी जेब मिलने पर ऐसी इच्छा खरीदारी की उतावली में बदल जाती है। यही बिना वास्तविक आवश्यकता के हर वस्तु पाने की बेचैनी मन पर जादू चलने की पहचान है।

चरण 3: निष्कर्ष खाली मन और विशेषतः भरी जेब होने पर जादू अधिक असर करता है। इसका असर हर सामान को जरूरी समझने और अनेक वस्तुएँ खरीद लेने की आतुरता में दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: कब के लिए मन और जेब की स्थिति लिखें तथा कैसे के लिए हर वस्तु जरूरी लगने और खरीदने की आतुरता बताएँ।

12(क). 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर जीजी की दृष्टि में त्याग और दान को परिभाषित कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के संस्मरण में जीजी त्याग और दान को लोककल्याण तथा आस्था से जोड़ती हैं।
- त्याग का मूल्य वस्तु की अधिकता से नहीं, उसकी आवश्यकता होते हुए भी उसे दूसरों के हित में छोड़ने से तय होता है।

चरण 1: जीजी की दृष्टि में त्याग जीजी के अनुसार सच्चा त्याग उस वस्तु को छोड़ना है जिसकी स्वयं हमें भी आवश्यकता हो। जो वस्तु हमारे पास फालतू पड़ी है, उसे दे देने में त्याग की कसौटी पूरी नहीं होती। अकाल में पानी अत्यंत दुर्लभ है; इसलिए उसी पानी को इंदर सेना पर डालना उन्हें वास्तविक त्याग लगता है। लेखक पानी की बरबादी का तर्क देता है, पर जीजी उसमें अपने अभाव के बीच किया गया समर्पण देखती हैं।

चरण 2: दान का आशय और उसका उदाहरण जीजी की दृष्टि में दान वह स्वेच्छापूर्ण अर्पण है जो अपने मोह को छोड़कर व्यापक हित के लिए किया जाए। वे किसान का उदाहरण देती हैं: किसान अच्छे बीज को बचाकर रखने के बजाय खेत में बोता है। देखने में वह अनाज मिट्टी में फेंकना लगता है, किंतु उसी से कई गुना फसल मिलती है। इसी तरह पानी देना उनके विश्वास में वर्षा और सबके कल्याण के लिए किया गया अर्पण है। इसमें मुख्य बात देने वाले की भावना और अपना प्रिय छोड़ने की तत्परता है।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी के अनुसार आवश्यक और प्रिय वस्तु को छोड़ना त्याग है तथा उसे लोकमंगल के लिए अर्पित करना दान है। अकाल में पानी का दान और किसान का बीज बोना इसी विचार को स्पष्ट करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दुर्लभ पानी और किसान के बीज का उदाहरण जोड़कर बताइए कि फालतू वस्तु देना सच्चे त्याग की कसौटी क्यों नहीं है।

12(ख). पहलवान की ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था? कैसे? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में ढोलक की ध्वनि जीवन के संघर्ष, साहस और जिजीविषा का प्रतीक है।
- महामारी से भयभीत गाँव के लिए लुट्टन पहलवान की ढोलक सामूहिक मानसिक सहारा बनती है।

चरण 1: गाँव पर ढोलक का प्रभाव महामारी और भूख से पीड़ित गाँव में रात का वातावरण भयावह हो गया था। चारों ओर सन्नाटा, बीमारों की कराह और मृत्यु की आशंका थी। ऐसे समय पहलवान की ढोलक सुनकर गाँववालों के मन में कुछ देर के लिए भय कम हो जाता था। निराश और असहाय लोगों में जीने की इच्छा तथा विपत्ति का सामना करने का साहस जागता था। उसकी ध्वनि उन्हें अनुभव कराती थी कि इस घोर संकट में भी जीवन और संघर्ष की आवाज़ शेष है।

चरण 2: आवाज़ यह असर कैसे पैदा करती थी ढोलक की लगातार गूँज सन्नाटे को चीरकर लोगों तक पहुँचती थी। पहलवान स्वयं इसी ताल से अखाड़े में लड़ने की प्रेरणा पाता रहा था; अब वही ताल गाँववालों को जीवन की लड़ाई लड़ने का संदेश देती थी। उसका बजते रहना पहलवान की अडिग जिजीविषा का प्रमाण था। लोग अपने दुःख और मृत्यु के भय को थोड़ी देर भूलकर उस लय से जुड़ जाते थे। ढोलक बीमारी को दूर नहीं करती थी, लेकिन टूटते मन को सहारा देकर विपत्ति सहने की शक्ति अवश्य देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष पहलवान की ढोलक पूरे गाँव में भय और निराशा के बीच साहस, आशा तथा संघर्ष की चेतना जगाती थी। सन्नाटे में

उसकी निरंतर ताल जीवन के बने रहने का भरोसा देती थी।

त्वरित सुझाव: ढोलक का असर समझाते समय महामारी का सन्नाटा, लोगों का भय और ताल से मिलने वाला मानसिक साहस—इन तीनों को जोड़िए।

12(ग). आपके विचार से चार्ली चैप्लिन की सर्व-स्वीकार्यता के क्या कारण हो सकते हैं? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली की कला आम मनुष्य के दुःख, संघर्ष और कमजोरियों को हास्य के माध्यम से सामने लाती है।
- उनकी मूक अभिनय-कला भाषा, देश और सामाजिक वर्ग की सीमाओं से आगे जाकर दर्शकों से जुड़ती है।

चरण 1: साधारण मनुष्य से आत्मीय संबंध मेरे विचार से चार्ली की सर्व-स्वीकार्यता का प्रमुख कारण उनके पात्र का आम आदमी के निकट होना है। वह अभाव, अपमान और कठिन परिस्थितियों से जूझता है, फिर भी जीने की इच्छा नहीं छोड़ता। दर्शक उसकी असफलताओं, असहायता और छोटी-छोटी आकांक्षाओं में अपने जीवन की झलक पाते हैं। उनकी कला किसी एक देश या वर्ग की समस्या तक सीमित नहीं रहती; उसमें भूख, प्रेम, अकेलापन और सम्मान की चाह जैसे व्यापक मानवीय अनुभव आते हैं।

चरण 2: हास्य, करुणा और भाषा से परे अभिनय चार्ली केवल हँसाते नहीं, हँसी के भीतर करुणा और संवेदना भी जगाते हैं। वे स्वयं को हँसी का पात्र बनाकर मनुष्य को अपनी कमजोरियों पर हँसने की दृष्टि देते हैं। इससे दर्शक उनसे दूरी बनाने के बजाय अपनापन अनुभव करते हैं। उनके हावभाव, चाल और शारीरिक अभिनय को समझने के लिए किसी खास भाषा का ज्ञान आवश्यक नहीं होता। बालक और बड़े, शिक्षित और अशिक्षित, विभिन्न संस्कृतियों के लोग उनकी अभिव्यक्ति समझ सकते हैं। यही सहज संप्रेषण और मानवीय संवेदना उन्हें व्यापक स्वीकृति दिलाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली की सर्व-स्वीकार्यता के कारण उनकी सार्वभौम मानवीय संवेदना, आम आदमी से आत्मीयता, हास्य और करुणा का मेल तथा भाषा की सीमा पार करने वाली अभिनय-कला हैं।

त्वरित सुझाव: कारण गिनाने के साथ उनका प्रभाव बताइए: आम आदमी से जुड़ाव पहचान पैदा करता है और मूक अभिनय भाषा की बाधा हटाता है।

12(घ). 'नमक' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी विभाजन के बावजूद जीवित मानवीय रिश्तों और साझा सांस्कृतिक स्मृतियों को उजागर करती है।
- कहानी में नमक अपनी जन्मभूमि से लगाव, आत्मीयता और मनुष्य की सहज भावनाओं का प्रतीक है।

चरण 1: विभाजन से बड़ी मानवीय आत्मीयता 'नमक' की मूल संवेदना यह है कि राजनीतिक सीमाएँ मनुष्यों के हृदय, स्मृतियों और आपसी प्रेम को पूरी तरह विभाजित नहीं कर सकतीं। भारत और पाकिस्तान के अलग होने पर भी लोगों का अपनी जन्मभूमि और वहाँ के जीवन से भावनात्मक संबंध बना रहता है। कहानी धर्म और राष्ट्रीयता की संकीर्ण पहचान के भीतर मनुष्य को बाँधने के बजाय उसकी साझा संवेदना सामने लाती है। एक साधारण वस्तु की इच्छा इस गहरे लगाव को व्यक्त कर देती है।

चरण 2: नमक और संबंधित प्रसंगों का अर्थ सिख बीबी सफ़िया से लाहौर का नमक लाने को कहती हैं। उनके लिए वह केवल खाने की वस्तु नहीं, अपने छूटे हुए वतन की याद और आत्मीय स्वाद है। सफ़िया उनकी इच्छा पूरी करने का प्रयास करती है। सीमा पर कस्टम अधिकारियों से जुड़े प्रसंग भी बताते हैं कि जन्मभूमि की स्मृति और भावनात्मक अपनापन सरकारी विभाजन के बाद भी बने रहते हैं। नमक इस तरह मनुष्यों के बीच स्नेह का माध्यम बनता है। कहानी का प्रभाव इसी में है कि सीमा और नियमों के बीच भी सहानुभूति तथा

इंसानियत अपना स्थान बना लेती है।

चरण 3: निष्कर्ष 'नमक' की मूल संवेदना मानवीय प्रेम, जन्मभूमि से लगाव और साझी संस्कृति की अखंडता है। कहानी बताती है कि राजनीतिक विभाजन के बावजूद मनुष्यों की आत्मीयता और स्मृतियाँ सीमाओं के पार जीवित रहती हैं।

त्वरित सुझाव: नमक को केवल खाद्य पदार्थ न कहें; सिख बीबी की लाहौर के नमक की इच्छा से उसके वतन और आत्मीयता के प्रतीक होने को स्पष्ट करें।

12(ङ). शिरीष और महात्मा गाँधी की तुलना किस आधार पर की गई है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हज़ारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध में शिरीष कठिन परिस्थितियों में भी जीवन की सरसता और सहजता बनाए रखने का प्रतीक है।
- महात्मा गाँधी से उसकी तुलना बाहरी रूप के आधार पर नहीं, बल्कि विपरीत वातावरण में अडिग रहकर प्रेम और लोकमंगल का संदेश देने के आधार पर की गई है।

चरण 1: शिरीष की विशेषता समझना शिरीष प्रचंड गर्मी, लू और प्रतिकूल वातावरण में भी खिला रहता है। बाहर की तपन उसे अपनी सहज मस्ती, कोमलता और सौंदर्य से विमुख नहीं करती। वह कठिनाइयों से घबराकर अपनी प्रकृति नहीं बदलता, बल्कि वातावरण को फूलों की सरसता देता है। इस प्रकार उसमें कठोर परिस्थितियों का सामना करने की दृढ़ता और भीतर की कोमलता एक साथ दिखाई देती हैं।

चरण 2: गाँधीजी के आचरण से तुलना करना गाँधीजी भी हिंसा, सांप्रदायिक द्वेष और अशांति के बीच अपने सत्य, अहिंसा और प्रेम के आदर्शों पर अडिग रहे। विभाजन के समय जब देश में घृणा और मारकाट फैली थी, तब वे लोगों के बीच जाकर शांति, सद्भाव और मानवीय एकता स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे थे। बाहरी उथल-पुथल उन्हें अपने लोकमंगल के मार्ग से विचलित नहीं कर सकी।

चरण 3: समानता का आधार स्पष्ट करना शिरीष की तपती ऋतु में खिलने की क्षमता और गाँधीजी का हिंसक वातावरण में प्रेम बनाए रखना एक ही आंतरिक शक्ति के रूप हैं। दोनों प्रतिकूलता के आगे झुकते नहीं और कटुता का उत्तर कटुता से नहीं देते। दोनों अपनी सहज सरसता बचाकर दूसरों को जीने की प्रेरणा देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष शिरीष और महात्मा गाँधी की तुलना विपरीत परिस्थितियों में अविचल रहने, भीतर की कोमलता और प्रेम बचाए रखने तथा अशांत वातावरण में भी जीवन को सरस बनाने के आधार पर की गई है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शिरीष की गर्मी में खिलने की विशेषता के साथ गाँधीजी के हिंसा के बीच शांति और प्रेम के प्रयास को जोड़ें।

13. भूषण के द्वारा ऊनी ड्रेसिंग गाउन देने पर यशोधर पंत के मन में उत्साह का अभाव किन जीवन मूल्यों की उपेक्षा के कारण दिखाई देता है? बुज़ुर्ग पीढ़ी हमसे क्या अपेक्षा करती है? (लगभग 150 शब्दों में लिखिए) [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर पंत की असहजता के माध्यम से पारिवारिक संबंधों में बढ़ती औपचारिकता और पीढ़ियों के बीच भावनात्मक दूरी दिखाई गई है।
- बुज़ुर्गों का सम्मान केवल वस्तुएँ भेंट करना नहीं है; उसमें आत्मीयता, संवाद, साथ और उनकी भावनाओं का ध्यान रखना भी शामिल है।

चरण 1: प्रसंग और उपेक्षित मूल्यों की पहचान भूषण पिता को ऊनी ड्रेसिंग गाउन देकर सुबह दूध लेने जाते समय उसे पहनने की सलाह देता है। यशोधर पंत को उपहार के साथ बेटे की सेवा और अपनत्व की अपेक्षा थी। वे चाहते थे कि बेटा दूध लाने का काम स्वयं करने

की बात कहता। इसलिए उत्तर का केंद्र उपहार का मूल्य या उसकी उपयोगिता नहीं, बल्कि उसके पीछे अनुभव होने वाली आत्मीयता की कमी होगी। प्रेम, सेवा, सहानुभूति और पारिवारिक जिम्मेदारी को इस प्रसंग से जोड़ना चाहिए।

चरण 2: उत्तर की रूपरेखा बनाना लगभग 150 शब्दों के उत्तर में पहले ड्रेसिंग गाउन के प्रसंग का उल्लेख करें। फिर बताएँ कि पिता के मन में उत्साह क्यों नहीं आया। इसके बाद बुज़ुर्गों की अपेक्षाएँ स्पष्ट करें: उनकी बात सुनना, उनके अनुभवों का आदर करना, दैनिक कामों में सहायता देना और उन्हें परिवार के निर्णयों तथा सुख-दुख में सहभागी रखना। सामान्य नैतिक उपदेश देने के स्थान पर कहानी के प्रसंग से इन बातों का संबंध बनाए रखें।

चरण 3: संपूर्ण आदर्श उत्तर भूषण के ऊनी ड्रेसिंग गाउन देने पर यशोधर पंत उत्साहित नहीं होते, क्योंकि उपहार में उन्हें अपेक्षित आत्मीयता और सेवा का भाव नहीं मिलता। भूषण कहता है कि सुबह दूध लेने जाते समय वे इसे पहनकर जा सकते हैं। यशोधर पंत चाहते हैं कि बेटा उनसे कहता कि दूध लाने का काम अब वह स्वयं करेगा। यह छोटी-सी अपेक्षा उनके भीतर की भावनात्मक आवश्यकता प्रकट करती है। उन्हें वस्तु की अपेक्षा बेटे के स्नेह, सहयोग और जिम्मेदारी की चाह है। इस प्रसंग में संवेदनशीलता, बड़ों के प्रति आदर, सेवा और पारिवारिक सहभागिता जैसे जीवन मूल्यों की उपेक्षा दिखाई देती है। बुज़ुर्ग पीढ़ी हमसे समय, सम्मान और अपनापन चाहती है। वह अपेक्षा करती है कि हम उसके अनुभव सुनें, भावनाएँ समझें और दैनिक कामों में सहायता करें। केवल महँगे उपहार देकर कर्तव्य पूरा नहीं होता; बुज़ुर्गों को परिवार में उपयोगी, प्रिय और सहभागी होने का विश्वास देना भी आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर पंत की उदासी आत्मीयता और सेवा की कमी से जुड़ी है। बुज़ुर्ग पीढ़ी भौतिक सुविधा के साथ स्नेह, सम्मान, संवाद और जिम्मेदार सहयोग की अपेक्षा रखती है।

त्वरित सुझाव: ड्रेसिंग गाउन के साथ दूध लाने की सलाह और पिता की बेटे से सेवा की अपेक्षा का अंतर स्पष्ट करके उत्तर को पाठ से जोड़ें।

14(क). आपके विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में 'जूझ' के लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? लगभग 150 शब्दों में तर्क सहित उत्तर दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना 'जूझ' में शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा और पारिवारिक बाधाओं का संघर्ष है।
- तर्कपूर्ण उत्तर में लेखक की लगन, पिता की संकीर्ण सोच और दत्ता जी राव के सहयोग को पाठ के प्रसंगों से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: दोनों दृष्टिकोणों का मूल्यांकन लेखक पढ़कर अपना भविष्य बदलना चाहता है। वह खेती के परिश्रम से भागता नहीं, बल्कि श्रम और अध्ययन को साथ लेकर चलने के लिए तैयार है। इसके विपरीत पिता उसे खेत में लगाए रखना चाहते हैं और पढ़ाई को उपयोगी नहीं मानते। आर्थिक कठिनाई उनकी चिंता समझाती है, लेकिन बच्चे की शिक्षा रोकना उसका उचित समाधान नहीं है।

चरण 2: पाठ के उदाहरण और उत्तर की योजना दत्ता जी राव पिता को समझाकर लेखक की पढ़ाई का रास्ता खोलते हैं। लेखक फिर विद्यालय जाता है और खेत के काम के साथ अध्ययन करता है। लगभग 150 शब्दों के उत्तर में पहले अपना पक्ष, फिर इन उदाहरणों के आधार पर तर्क और अंत में शिक्षा का महत्त्व देना उचित है।

चरण 3: लगभग 150 शब्दों में आदर्श उत्तर मेरे विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में 'जूझ' के लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक समझता था कि शिक्षा उसके जीवन को नई दिशा दे सकती है। इसलिए खेती के कठिन परिश्रम के बीच भी उसकी पढ़ने की इच्छा बनी रही। वह जिम्मेदारियों से भागना नहीं चाहता था; वह श्रम के साथ पढ़ाई करने को तैयार था। दत्ता जी राव ने उसकी लगन पहचानी और पिता को समझाकर उसे विद्यालय भेजने में सहायता की। उनका व्यवहार संवेदनशील और दूरदर्शी था। इसके विपरीत पिता बेटे को खेती में लगाए रखना चाहते थे। परिवार की आर्थिक कठिनाइयाँ वास्तविक थीं, किंतु उनके कारण बच्चे को शिक्षा से वंचित करना उचित नहीं था। शिक्षा व्यक्ति में विवेक, आत्मविश्वास और आगे बढ़ने की क्षमता विकसित करती है। विद्यालय लौटकर लेखक का लगन से पढ़ना और कविता में रुचि लेना सिद्ध करता है कि अवसर मिलने पर उसकी प्रतिभा विकसित हो सकती थी। इसलिए लेखक और दत्ता जी राव का दृष्टिकोण अधिक उचित था।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था, क्योंकि उन्होंने शिक्षा को बेहतर भविष्य और प्रतिभा के विकास का साधन

माना।

त्वरित सुझाव: अपने पक्ष को केवल राय तक सीमित न रखें; दत्ता जी राव की सहायता और लेखक के श्रम तथा पढ़ाई साथ करने के प्रसंग से प्रमाण दें।

14(ख). "सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।" सोदाहरण पुष्टि कीजिए। (लगभग 150 शब्दों में)

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो के अवशेषों के आधार पर सिंधु सभ्यता की समृद्धि और सादगी का विवेचन है।
- कथन की पुष्टि के लिए साधन-संपन्न नगर-व्यवस्था और आडंबरहीन सामाजिक जीवन के उदाहरण साथ देने आवश्यक हैं।

चरण 1: समृद्धि के प्रमाण पहचानना नियोजित सड़कें, पक्की ईंटों के मकान, कुएँ, स्नानघर, ढकी नालियाँ और विशाल सार्वजनिक स्नानागार विकसित नगर-जीवन के प्रमाण हैं। इनसे तकनीकी कौशल और स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाई देती है। समृद्धि का अर्थ केवल राजसी वैभव नहीं, नागरिक सुविधाओं का विकास भी है।

चरण 2: आडंबरहीनता का आधार और उत्तर की योजना यहाँ भव्य राजमहल, विशाल मंदिर और राजाओं के स्मारकों का वैसा प्रभुत्व नहीं दिखता जैसा अन्य प्राचीन सभ्यताओं में दिखाई देता है। उपलब्ध कलाकृतियाँ और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ जीवन के निकट हैं। उत्तर में पहले समृद्धि के ठोस उदाहरण, फिर शक्ति-प्रदर्शन के अभाव और नागरिक व्यवस्था की प्रधानता पर विचार देना चाहिए।

चरण 3: लगभग 150 शब्दों में आदर्श उत्तर सिंधु सभ्यता साधन-संपन्न थी, किंतु उसकी समृद्धि में भव्यता का आडंबर नहीं दिखाई देता। मोहनजोदड़ो की सुव्यवस्थित सड़कें, पक्की ईंटों के मकान, कुएँ, स्नानघर और ढकी हुई नालियाँ विकसित नगर-योजना का परिचय देते हैं। विशाल सार्वजनिक स्नानागार तथा जल-निकास की व्यवस्था नागरिक सुविधाओं और स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाती है। व्यापार, हस्तशिल्प, मुहरें और आभूषण भी उसके समृद्ध जीवन के प्रमाण हैं। इसके बावजूद वहाँ राजसत्ता का आतंक पैदा करने वाले विशाल राजमहलों, भव्य मंदिरों और शासकों के विराट स्मारकों का प्रभुत्व नहीं मिलता। कलाकृतियों में भी आकार की विशालता से अधिक सूक्ष्म कौशल और जीवन की सहजता महत्त्वपूर्ण है। यहाँ की नगर-व्यवस्था सामान्य नागरिक के जीवन को सुगम बनाने पर केंद्रित लगती है। सार्वजनिक निर्माण निजी वैभव के प्रदर्शन से अधिक महत्त्व रखते हैं। इस प्रकार सिंधु सभ्यता की विशेषता संपन्नता के साथ संयम, उपयोगिता और सुघड़ता थी। उसकी महानता दिखावे में नहीं, सुव्यवस्थित तथा सुसंस्कृत जीवन में प्रकट होती है।

चरण 4: निष्कर्ष मोहनजोदड़ो के नागरिक निर्माण उसकी संपन्नता और उपयोगिता-बोध के प्रमाण हैं; राजसी प्रदर्शन की प्रधानता न होना उसकी आडंबरहीनता दर्शाता है।

त्वरित सुझाव: पुष्टि करते समय नगर-योजना का एक उदाहरण और राजसी प्रदर्शन के अभाव का एक उदाहरण अवश्य दें; केवल समृद्धि का वर्णन पर्याप्त नहीं है।